Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ
كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ

(सूरत बक़रह:184)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम पर रोज़े इसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 7
अंक- 16

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

19 रमज़ान 1443 हिज्री कमरी, 21 शहादत 1401 हिज्री शम्सी, 21 अप्रैल 2022 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

(1903) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो व्यक्ति झूठ बोलना और झूठ पर अमल करना नहीं छोड़े तो अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं कि ऐसा व्यक्ति खाना और पीना छोड़ दे।

रोज़ादार के लिए ज़रूरी हिदायात

(1904) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : अल्लाह तआला फ़रमाता है इब्न-ए-आदम का प्रत्येक अमल उसके लिए होता है सिवाए रोज़े के, क्योंकि वह मेरे लिए है और मैं ही उस का बदला होता हूँ और रोज़े ढाल हैं और जब तुम में से किसी के रोज़े का दिन हो तो वह कोई अश्लील बात न करे और न शोर शराबा करे और यदि कोई उस को गाली दे या उस से लड़े तो चाहिए कि वह यह कह दे : मैं रोज़ादार व्यक्ति हूँ। और उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जान है निसंदेह रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह तआला के नज़दीक कस्तूरी की खुशबू से भी अधिक प्रिय है। रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियां हैं जिनसे वह ख़ुश होता है। पहली ख़ुशी उस वक़्त होती है जबकि वह इफ़्तार करता है और दूसरी जब वह अपने रब से मुलाक़ात करेगा तो अपने रोज़ा की वजह से ख़ुश होगा।

(सही बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् सौम, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

ख़ुदा तआला तो सर्वशक्तिमान है वह यदि चाहे तो एक क्षय रोग के शिकार व्यक्ति को भी रोज़े की ताक़त अता कर सकता है जब इन्सान सिदक़ और कमाल इख़लास से ख़ुदा तआला के समक्ष निवेदन करता है कि इस महीना में तू मुझे वंचित न रख तो ख़ुदा उसे वंचित नहीं रखता

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इन्सान का यह कर्तव्य होना चाहिए कि अपने सामर्थ्य के अनुसार ख़ुदा के फ़रायज़ बजा लाए। रोज़े के बारे में ख़ुदा फ़रमाता हैं وَاَنۡ تَصُوۡمُوۡا خَيۡرٌ لَّكُمۡ (अल् बकर: : 185) अर्थात यदि तुम रोज़ा रख भी लिया करो तो तुम्हारे वास्ते बड़ी नेकी है।

एक दफ़ा मेरे दिल में आया कि फ़िद्या किस लिए निर्धारित किया गया है तो मालूम हुआ कि तौफ़ीक़ के वास्ते है। ताकि रोज़े की तौफ़ीक़ इससे हासिल हो। ख़ुदा ही की ज़ात है जो तौफ़ीक़ अता करती है और प्रत्येक वस्तु ख़ुदा ही से मंगनी चाहिए। ख़ुदा तआला तो क़ादिर-ए-मुतलक़ है वह यदि चाहे तो एक क्षय रोग के शिकार व्यक्ति को भी रोज़े की ताक़त अता कर सकता है तो फ़िद्या से यही उद्देश्य है कि वह ताक़त हासिल हो जाए और ये ख़ुदा के फ़ज़ल से होता है। अत: मेरे नज़दीक ख़ूब है कि दुआ करे कि इलाही ये तेरा एक मुबारक महीना है और मैं इस से वंचित रहा जाता हूँ और क्या मालूम कि अगले वर्ष जीवित रहूं या न। या उन फ़ौत शूदा रोज़ों को अदा कर सिक्कों या न। और उस से तौफ़ीक़ तलब करे तो मुझे यक़ीन है कि ऐसे दिल को ख़ुदा ताक़त बख़श देगा।

यदि ख़ुदा चाहता तो दूसरी उम्मतों की तरह इस उम्मत में कोई क़ैद न रखता परन्तु उसने क़ैदें भलाई के वास्ते रखी हैं मेरे नज़दीक असल यही है कि जब इन्सान सिदक़ और कमाल इख़लास से ख़ुदा के समक्ष अर्ज़ करता है कि इस महीना में तू मुझे वंचित न रख तो ख़ुदा उसे वंचित नहीं रखता और ऐसी हालत में यदि इन्सान रमज़ान के महीने में बीमार हो जाए तो यह बीमारी उस के हक़ में रहमत होती है। क्योंकि प्रत्येक अमल की निर्भरता नीयत पर है मोमिन को चाहिए कि वह अपने वजूद से अपने आपको ख़ुदा तआला की राह में दिलावर साबित कर दे। जो व्यक्ति कि रोज़े से महरूम रहता है परन्तु उसके दिल में यह नीयत दर्द-ए-दिल से थी कि काश मैं तंदरुस्त होता और रोज़ा रखता और उसका दिल इस बात के लिए रौता है तो फ़रिश्ते उस के लिए रोज़े रखेंगे इस शर्त के साथ कि वह बहाना बनाने वाला न हो तो ख़ुदा तआला कदापि उसे सवाब से वंचित नहीं रखेगा।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 , पृष्ठ 426 मुद्रित 2018 क़ादियान)

किसी सूफ़ी ने कहा है कि तसव्वुफ़ (अध्यात्मवाद की सांसारिक विषयों से विरक्ति) की जान कम बोलना, कम खाना और कम सोना है और रमज़ान इस तसव्वुफ़ की सारी जान का निचोड़ अपने अंदर रखता है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

रोज़ों का यह एक बहुत बड़ा फ़ायदा है कि उसके माध्यम से इन्सान को नेकी के लिए मुशक़्क़त बर्दाश्त करने की आदत पैदा हो जाती है। इन्सान दुनिया में कई किस्म के काम करता है। वह मेहनत और मशक़्क़त भी करता है। वह आवारगी भी करता है। वह इधर उधर भी फिरता है। वह गप्पें भी हाँकता है। बिल्कुल फ़ारिग़ न इन्सानी दिमाग़ रहता है न उसका जिस्म। कुछ न कुछ काम इन्सान ज़रूर करता रहता है। परन्तु कुछ लोग ग़लत काम होते हैं कुछ हानिकारक और कुछ लाभदायक और कुछ बहुत ही अच्छे। लेकिन रमज़ान इन्सान को एक ऐसे काम की आदत डालता है जिसके नतीजा में उसे नेक कामों में मशक़्क़त बर्दाश्त करने की आदत हो जाती है। इन्सानी ज़िंदगी की राहत और आराम की चीज़ें क्या होती हैं यही खाना पीना सोना और शारीरिक सम्बन्ध। सभ्यता का उच्च उदाहरण शारीरिक सम्बन्ध हैं जिनमें दोस्तों से मिलना और अज़ीज़ों से ताल्लुक़ात रखना भी शामिल है। परन्तु शारीरिक सम्बन्धों में सबसे ज़्यादा क़रीबी ताल्लुक़ पति पत्नी का है। अत: इन्सानी आराम इन्ही कुछ बातों में आधारित है कि वह खाता है वह पीता है वह सोता है और वह शारीरिक सम्बन्ध क़ायम रखता है। किसी सूफ़ी ने कहा है कि तसव्वुफ़ की जान कम बोलना, कम खाना और कम सोना है और रमज़ान इस तसव्वुफ़ की सारी जान का निचोड़ अपने अंदर रखता है। कम सोना स्वयं ही इस में आ जाता है क्योंकि रात को तहज्जुद के लिए उठना पड़ता है। कम खाना भी ज़ाहिर बात है

शेष पृष्ठ 11 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त करने वाला अल्लाह तआला है

(क़ुरआन-ए-मजीद की 26 आयतों पर आरोपों के उत्तर)

मुहम्मद हमीद कौसर, नाज़िर दावत इलाल्लाह मर्कज़िया उत्तर भारत, क़ादियान (भाग-8)

आरोप आयत नंबर 2(g)

اِنَّمَا النَّسِیۡٓءُ زِیَادَۃٌ فِی الۡکُفۡرِ یُضَلُّ بِہِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا یُحِلُّوۡنَہٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوۡنَہٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوۡا عِدَّۃَ مَا حَرَّمَ اللّٰہُ فَیُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰہُ ؕ زُیِّنَ لَہُمۡ سُوۡٓءُ اَعۡمَالِہِمۡ ؕ وَاللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الۡکٰفِرِیۡنَ ○

(सूरः अल् तौबाा, सूरः नंबर 9 आयत नंबर 37)

अनुवाद : निसंदेह नसई कुफ़्र में एक बढ़ोतरी है। इससे उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया गुमराह कर दिया जाता है। किसी वर्ष तो वे उसे जायज़ क़रार देते हैं और किसी वर्ष उसे हराम क़रार देते हैं ताकि उसकी गिनती पूरी रखें जिसे अल्लाह ने हुरमत वाला क़रार दिया है, ताकि वह उसे जायज़ बना दें जिसे अल्लाह ने हराम किया है। उनके लिए उनके आमाल की बुराई ख़ूबसूरत करके दिखाई गई है और अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता।

स्पष्टीकरण इस्लाम से पूर्व अरबों में क़मरी वर्ष बारह महीनों पर आधारित होता था। जिनमें से 4 महीने हुर्मत वाले महीने कहलाते थे लेकिन अरब लोग इन हुर्मत वाले महीनों को अपने दुनियावी लाभ के लिए अपनी मर्ज़ी से आगे पीछे कर देते थे और उसे अरबी में "अल्नसी" कहा जाता था ताकि हुर्मत वाले महीनों में जो चीज़ें हराम हैं जैसे लड़ाई इत्यादि वे कर सकें और बाद में कुछ दूसरे महीनों को हुर्मत वाला महीना क़रार दे देते थे -क़ुरआन-ए-मजीद की जिस आयत पर आरोप कर्ता ने आरोप लगाया है इस का अनुवाद यह है। "अल्नसी" कुफ़्र में एक बढ़ोतरी है और इस के माध्यम से लोगों को गुमराह किया जाता था।

इस्लाम ने भी इन महीनों को बरक़रार रखा और उनके नाम ये हैं (1) मुहर्रम (2) सफ़र (3) रबी'-उल-अव्वल (4) रबीउस्सानी (5)जमादी-उल-अव्वल (6) जमादी-उस-सानी (7) रजब (8) शाबान (9) रमज़ान (10) शवाल (11) ज़िलक़ा'दा (12) ज़िलहिज्जा।

उनमें से रसूले पाकसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अरबों के पूर्व के तरीक़ के अनुसार चार महीनों को हुर्मत वाले महीने क़रार दिया और उनके नाम ये हैं : (1) ज़िलक़ा'दा (2) ज़िलहिज्जा (3) मुहर्रम (4) रजब

(बहवाला सही अल् बुख़ारी, किताब अल्तफ़सीर अल् तौबा)

इन चार महीनों की हुर्मत क़ायम करने का उद्देश्य यह था कि हज करने वाले शांति से ख़ाना काअबा तक यात्रा कर सकें और उनको कोई ख़ौफ़ और ख़तर लाहक़ न हो। इन चार महीनों में से एक महीना ज़िलक़ा'दा ज़िलहिज्जा से पहले आता है। और फिर ज़िलहिज्जा के बाद मुहर्रम का महीना भी हुरमत वाला महीना है। इस में हज करने वाले हज के कर्तव्यों का निवारण करने के बाद बे-ख़ौफ़ और ख़तर पुरअमन माहौल में अपने घरों को वापस चले जाएं।

क़ुरआन-ए-करीम की इस आयत के माध्यम से अल्लाह तआला ने अल् नसी को पूर्णता मना क़रार दिया है और उसे कुफ़्र और गुमराही के जुमरे में शामिल किया है। क्योंकि अल् नसी के माध्यम से हज करने वालों को नुक़्सान पहुंचाने का अंदेशा था। इस्लाम ने हज करने वालों की सलामती के लिए और उन चार महीनों में जज़ीरा अरब और दुनिया में अमन और शान्ति का माहौल बरक़रार रखने के लिए उनकी हुर्मत को बरक़रार रखने और रखवाने का आदेश दिया है। ऐसा इन्सान जो इस विषय में अपनी ज़िद और अना बरक़रार रखते हुए इन हुर्मत वाले महीनों का इन्कार करने वाला है और इस वतीरे को छोड़ना नहीं चाहता है उनके बारे में अल्लाह का फ़रमान है कि जो ख़ुद हिदायत नहीं चाहता अल्लाह भी उसे हिदायत नहीं देता।

वर्णित आयत के आख़िर पर ख़ुदा का इरशाद कि "अल्लाह काफ़िर क़ौम को हिदायत नहीं देता।" अर्थात जो इन्सान ख़ुद हिदायत का आशावान नहीं अल्लाह तआला उसे ज़बरदस्ती हिदायत नहीं देता क्योंकि दीन के सिलसिला में कोई जबरऔर इकराह नहीं।

आरोप आयत नंबर 2(h)

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِیۡنَ اتَّخَذُوۡا دِیۡنَکُمۡ ہُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِیۡنَ اُوۡتُوا الۡکِتٰبَ مِنۡ قَبۡلِکُمۡ وَالۡکُفَّارَ اَوۡلِیَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰہَ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ○ (सूरः अल् मायदा, सूरः नंबर 5 आयत नंबर 58)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई उन को जिन्हों ने तुम्हारे दीन को उपहास और खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

स्पष्टीकरण : एक इन्सान जब सच्चे दिल से इस्लाम को बतौर दीन अपने लिए स्वीकार कर लेता है तो लाज़िमी तौर पर उसके दिल में अल्लाह तआला और उसके रसूल की मुहब्बत पैदा हो जाती है और प्रतिदिन वह मज़बूत और गहरा होती जाता है। और दुनिया का ये तरीक़ है कि कोई भी ग़ैरत मंद इन्सान यह पसंद नहीं करता कि कोई दूसरा व्यक्ति उसके महबूब का उपहास और अपमान करे उदाहरणत: एक ऐसा इन्सान जो अपने माता पिता से प्रेम करता और उनका सम्मान करता है। उसकी ग़ैरत बर्दाश्त नहीं करेगी कि कोई दूसरा उसके माता पिता की अपमान करे और उन्हें बुरा भला कहे। यदि अपमान करने वाला अपनी इस हरकत से बाज़ नहीं आएगा तो एक ग़ैरत मंद इन्सान न तो इस से दोस्ती रखेगा और न ही उस से किसी किस्म की क़ुरबत रखेगा।

दीन-ए-इस्लाम के बारे में अल्लाह तआला का फ़रमान है कि उसे जो चाहे क़बूल करे और जो चाहे उसका इन्कार कर दे उस पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं अगर किसी की समझ में दीन-ए-इस्लाम की तालीमात नहीं आतीं तो उस का हक़ है कि वे इन्कार कर दे और एक शरीफ़ इन्सान इन्कार के बाद ख़ामोशी इख़्तियार करेगा परन्तु कोई दूसरा व्यक्ति तक़ज़ीब और तकफ़ीर के साथ साथ उपहास और मज़ाक़ भी करे और इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन-ए-मजीद के साथ धृष्टता-पूर्वक व्यवहार करे तो अल्लाह तआला ने मोमिनों को ये नसीहत की कि तुम्हारी ईमानी ग़ैरत का तक़ाज़ा है कि ऐसे लोगों को अपना दोस्त न बनाओ।

और एक सादा सी मिसाल से उसे यूं भी समझा जा सकता है कि शरारती और बुरी आदात रखने वाले बच्चों से माता पिता अपने बच्चों को दोस्ती न रखने और उस से दूर रखने की नसीहत करते हैं ताकि वे उस की सोहबत से बुरा प्रभाव स्वीकार न कर लें। इस आयत में समस्त किताब वाले या दूसरे धर्मों के लोगों से दोस्ती बनाने से कदापि मना नहीं किया गया। जबकि उन लोगों से रोका गया है जो कि इस्लाम के अक़ायद और नज़रियात और पवित्रताओं का अपमान और इहानत करते हैं। लेकिन यहां दोस्ती न करने का कदापि यह अर्थ नहीं कि इस्तिहज़ा और अपमान करने वालों के ख़िलाफ़ इस तरह के प्रदर्शन किए जाएं जिन के माध्यम से देश और लोगों का जानी-ओ-माली नुक़्सान हो। इसकी इस्लाम कदापि इजाज़त नहीं देता। शांति प्रिय तरीक़ से अपनी बात रखने और आरोप लगाने वालों का उत्तर देने की आज्ञा है।

इस स्पष्टीकरण के बाद न तो इस पर कोई आरोप रहता हैऔर न ही अनुचित प्रश्न की गुंजाइश बाक़ी रहती है।

आरोप आयत नंबर 2(j)

اِنَّکُمۡ وَمَا تَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰہِ حَصَبُ جَہَنَّمَ ؕ اَنۡتُمۡ لَہَا وٰرِدُوۡنَ ○

(सूरः अल् अम्बिया, सूरः नंबर 21आयत नंबर 99)

अनुवाद : निसंदेह तुम और वे जिसकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते थे जहन्नुम का ईंधन हो। तुम इस में उतरने वाले हो।

स्पष्टीकरण अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में कुछ दूसरे स्थानों पर

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

यह भी ख़िलाफ़त की बरकात में से है कि शरीयत को क़ायम करने के लिए कोशिश करनी चाहिए और ख़लीफ़-ए-वक़्त पूरी कोशिश है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद सिद्दीक़-ए-अकबर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

"किस क़दर रसूल का अनुसरण है कि निहायत ख़तरनाक हालात में बावजूद इस के कि बड़े सहाबा लड़ाई के ख़िलाफ़ मश्वरा देते हैं फिर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम के हुक्म को पूरा करने के लिए वह प्रत्येक किस्म का ख़तरा बर्दाश्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं।"

दुनिया के चिंताजनक हालात में दुआएं करने की तहरीक "विशेषता यह दुआ करें कि दुनिया अपने पैदा करने वाले को पहचानने लग जाए"

पूर्व प्रिंसिपल जामिआ अहमदिया कैनेडा और पूर्व मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा आदरणीय मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के हालात-ए ज़िंदगी के वर्णन में ज़कातमें बाधा के विषय में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के विचार और उनके साथ सुलूक का वर्णन हो रहा था। इस बारे में मज़ीद तारीख़ तिब्री में यूं वर्णन हुआ है। असद और ग़त्फ़ान और तई क़बायल तुलेहा बिन ख़ूवेलद जिसने नबुव्वत का झूठा दावा किया था उसके हाथ पर इकट्ठे हो गए सिवाए कुछ ख़ास लोगों के। क़बीला असद के लोग समीरा के स्थान पर जमा हुए। समीरा जो है यह क़ौम-ए-आद के एक व्यक्ति के नाम पर इस मुक़ाम का नाम रखा गया है और यह मक्का के रास्ते पर एक क़ौम है। इस इलाक़े के इर्द-गिर्द सियाह-रंग के पहाड़ हैं जिनकी वजह से इस का यह नाम रखा गया है। फ़ज़ारह और ग़तफ़ान के लोग अपने साथियों के साथ ती के जुनूब में जमा हुए। तई अपने इलाक़े की सरहद पर जमा हुए। सअलबा बिन साद और मुर्रा और अबस में से उनके हिमायती रबज़ह के स्थान अबरक में जमा हुए। रबज़ह भी तीन दिन की दूरी पर मदीना की वादियों में से एक वादी है। अबरको अलरबज़ा क़बीला बनू ज़ुबियान की जगहों में से थी। बनू किनाना के कुछ लोग भी उनसे आ मिले परन्तु वे इलाक़े उनके बर्दाश्त करने वाले न हो सके इसलिए उन लोगों की दो जमाअतें हो गईं। एक जमाअत अबरक में मुक़ीम रही और दूसरी ज़ुल कस्सा चली गई। ज़ुल्कस्सा भी मदीना से चालीस मील के फ़ासले पर एक जगह है। तलेहा ने हिबाल को उनकी मदद के लिए भेजा। हिबाल तलेहा के भाई का बेटा था। बहरहाल इस तरह हिबाल ज़ुल्कस्सा वालों का सरदार बन गया जहां असद और लौस, दील और मुद्लिज् क़बायल में से उनके समर्थक भी थे। औफ़ बिन फ़ुलान बिन सिलान, अबरक स्थान में मौजूद मुर्रह क़बीला का सरदार निर्धारित हुआ और सअलबा और अबस क़बायल पर हारिस बिन फ़ुलान सरदार निर्धारित हुआ जो बनू सूबेय में से था। इन क़बाइल ने अपने वफ़द भेजे जो मदीना आए। ये सब जमा हुए उस के बाद प्रत्येक क़बीले ने अपना अपना एक वफ़द बना के भेजा। वे लोग जो आए थे वे अमाइदीन मदीना के हाँ ठहरने वाले हुए, वहां ठहरे। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु के इलावा सबने उनको अपने हाँ मेहमान बनाया और उनको अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में इस शर्त पर लेकर आए कि वे नमाज़ पढ़ते रहेंगे परन्तु ज़कात नहीं देंगे। अल्लाह ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को हक़ पर सुदृढ़ कर दिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : यदि ये ऊंट बाँधने की रस्सी भी नहीं देंगे तो मैं उनसे जिहाद करूँगा।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 254-255 सन् 11 हिज्री, मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) (अल् सीरतुन नबविय्या ले इब्ने हाशिम, पृष्ठ 434 हाशिया, दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.) (मौअज्जमुल बुल्दान, भाग 3 पृष्ठ 290,67 भाग प्रथम, पृष्ठ 89 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत) (फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 236 ज़वारे अकैडमी पब्ली केशन्ज् कराची 2003 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का मत देखकर जब ज़कात में बाधा डालने वाले वफ़ूद मदीना से वापस जाने लगे तो उस वक़्त उन लोगों की क्या कैफ़ीयत थी, इस का वर्णन करते हुए एक सीरत निगार लिखते हैं कि इन वफ़ूद ने जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु का अज़म देखा तो मदीना से वापस हो गए लेकिन मदीना से जाते वक़्त दो बातें उनके ज़हन में थीं। नंबर एक यह कि ज़कात मना के सिलसिला में कोई गुफ़्तगु लाभदायक नहीं। इस सिलसिला में इस्लाम का हुक्म स्पष्ट है और ख़लीफ़ा की अपनी राय और अज़म से पीछे हटने की कोई उम्मीद नहीं। विशेषता जब कि मुस्लमान दलील के वाज़िह होने के बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु की राय से सहमत हो चुके हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के स्थामं के लिए कमरबस्ता हैं। नंबर दो अपने मन में मुस्लमानों की कमज़ोरी और कम संख्या को ग़नीमत जानते हुए मदीना पर ऐसा ज़ोरदार हमला किया जाए जिससे इस्लामी हुकूमत गिर जाए और इस दीन का अंत हो जाए।

(उद्धरित सय्यदना अबू बकर शख़्सियत और कारनामे अज़ डाक्टर अली सलाबी, पृष्ठ 278 मुद्रित अल् फ़ुर्क़ान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

यह उनका अपना खयाल था कि इस तरह हम क़बज़ा कर लेंगे। बहरहाल उन लोगों ने वापस जा कर अपने क़बायल से कहा कि इस वक़्त मदीना में बहुत कम आदमी हैं और उन्हें हमला करने की तरग़ीब दिलाई जबकि दूसरी तरफ़ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु भी ग़ाफ़िल नहीं थे। उन्होंने इस वफ़द के जाने के बाद मदीना के समस्त नाकों पर बाक़ायदा पहरे निर्धारित कर दिए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु इस काम पर निर्धारित किए गए। एक रिवायत में हज़रत साद बिन अबी व्क्कास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु का बिन औफ़ अविका नाम भी आता है कि ये भी नाके पर पहरे के लिए निर्धारित किए गए। इसके इलावा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समस्त मदीना वालों को हुक्म दिया कि वे मस्जिद में जमा हूँ और फिर उनसे फ़रमाया कि समस्त सरज़मीन काफ़िर हो गई है और उन लोगों के वफ़ूद तुम्हारी कम संख्या को देख गए हैं और तुम लोग नहीं जानते कि वे दिन के वक़्त या रात में तुम पर हमला-आवर होंगे। इन लोगों की सबसे क़रीब जमाअत यहां से केवल एक बरीद के फ़ासले पर है। बरीद बारह मील के बराबर होता है कि बारह मील के फ़ासले पर है और कुछ लोग ख़ाहिश रखते थे कि हम उनकी शरायत क़बूल कर लें और उनसे सुलह कर लें परन्तु हमने उनकी बात नहीं मानी और उनकी शर्तें खंडित कर दें। इस लिए अब मुक़ाबले के लिए बिल्कुल तैयार हो जाओ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का अंदाज़ा बिल्कुल दरुस्त निकला और ज़कात देने से इंकार करने वाले के वफ़द के मदीना से वापस जाने के बाद केवल तीन रातें गुज़री थीं कि इन लोगों ने रात होते ही मदीना पर हमला कर दिया।

अपने साथियों में से एक जमात को वे ज़ू-हिसा छोड़ आए ताकि वे वक़्त-ए-ज़रूरत सैनिकों आदि के रूप में मिलने वाली सहायता का काम दें। ज़ू-हिसा बनू फ़ज़ारह के पानियों में से एक है और यह रबज़ह और नख़ल के मध्य है। बहरहाल ये हमला करने वाले रात के वक़्त मदीना के नाकों पर पहुंचे। वहां पहले से जंगजू निर्धारित थे। उनके पीछे कुछ और लोग थे जो बुलंदी पर चढ़ रहे थे। पहरेदारों ने उन लोगों को दुश्मन के आक्रमण से आगाह किया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को दुश्मन के आक्रमण की सूचना देने के लिए आदमी दौड़ाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये संदेश भिजवाया कि सब अपनी अपनी

जगह पर जमे रहें जिस पर समस्त फ़ौज ने ऐसा किया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु मस्जिद में मौजूद मुस्लमानों को लेकर ऊंटों पर सवार हो कर उनकी तरफ़ रवाना हुए और दुश्मन पराजित हो गया। मुस्लमानों ने अपने ऊंटों पर उनका पीछा किया यहां तक कि वह ज़ूहिसा जा पहुंचे। आक्रमण करने वालों के सैनिकों का गिरोह चमड़े के मशकीज़ों में हवा भर कर और उनमें रस्सियाँ बांध कर मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए निकला और उन्होंने इन मशकीज़ों को अपने पैरों से चोट लगा कर ऊंटों के सामने लुढका दिया और चूँकि ऊंट इस से सबसे ज़्यादा बिदकता है कि मश्कीज़े, लुढ़कती हुई चीज़ आ रही है इसलिए मुस्लमानों के समस्त ऊंट उनसे इस तरह बिदक कर भागे कि वे मुस्लमानों से जो उन पर सवार थे किसी तरह भी सँभल न सके यहां तक कि वे मदीना पहुंच गए। जबकि इस से मुस्लमानों का कोई नुक़्सान नहीं हुआ और न उनके हाथ कोई चीज़ आई।

मुस्लमानों की इस बज़ाहिर पराजय से दुश्मनों को यह सोचा कि मुस्लमान कमज़ोर हैं उनमें मुक़ाबले की ताक़त नहीं है। इस ग़लती में उन्होंने अपने इन साथियों को जो ज़ुल्कस्सा में रहते थे इस वाक़िया की सूचना दी वे इस ख़बर पर भरोसा कर के इस जमाअत के पास आ गए परन्तु उनको यह मालूम नहीं था कि अल्लाह ने उनके विषय में कुछ और ही फ़ैसला किया है जिसको वे बहरहाल नाफ़िज़ कर के छोड़ेगा। रात-भर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी फ़ौज की तैयारी में व्यस्त रहे और सबको तैयार करके रात के पिछले-पहर पूरी फ़ौज को तर्तीब देकर पैदल रवाना हुए। नोमान बिन मुकर्रिन मैमना पर, अब्दुल्लाह बिन मुकर्रिन मयसरा पर और सुवेद बिन मुकर्रिन फ़ौज के पिछले हिस्सा पर निगरान थे। उनके साथ कुछ सवार भी थे। अभी फ़ज्र नहीं हुई थी कि मुस्लमान और ज़कात देने से इंकार करने वाले एक ही मैदान में थे। मुस्लमानों की कोई आहट और भिनक भी न उनको मिल सकी कि मुस्लमानों ने उनको तलवार के घाट उतारना शुरू कर दिया। फिर रात के पिछले-पहर में लड़ाई हुई।

सूरज की किरण ने अभी आसमान में रौशनी नहीं की थी कि मुनकरीन ने शिकस्त खा कर भागने का मार्ग इख़्तियार किया।

फिर लिखा है कि मुस्लमानों ने उनके समस्त जानवरों पर क़बज़ा कर लिया। इस वाक़िया में हुबल मारा गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन लोगों का पीछा किया यहां तक कि ज़ुल्कस्सा पहुंच कर ठहरे। यह पहली फ़तह थी जो अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को दी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नुमान बिन मुकर्रिन को कुछ लोगों के साथ वहीं निर्धारित कर दिया और ख़ुद मदीना वापस तशरीफ़ ले आए। यह तारीख़ तिब्री का हवाला है। (तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 255-256 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.) (अल् बिदाया वन्नहाया, भाग3 हिस्सा 6 पृष्ठ 308 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया 2001 ई.)(अल् मुन्जिद ज़ेर माद्दा "बरद") (मौअज्ज्मुल बुल्दान, भाग 2, पृष्ठ 297 "अल् हिस्सा")

इस जंग को ग़ज़व-ए-बदर से समानता देते हुए एक मुसन्निफ़ लिखते हैं कि इस अवसर पर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ईमान और यक़ीन, अज़म और मज़बूती का जो प्रदर्शन किया इस से मुस्लमानों के दिल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय के ग़ज़वात की याद ताज़ा हो गई।

अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय की यह पहली लड़ाई बड़ी हद तक जंग बदर से मिलती जुलती है। जंग बदर के रोज़ मुस्लमान केवल तीन सौ तेराह की थोड़ी संख्या थी जबकि मुशरिकीन मक्का की संख्या एक हज़ार से अधिक थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मुख़ालिफ़ीन से जंग का जो यह वाक़िया पेश आया इस अवसर पर भी मुस्लमानों की संख्या बहुत क़लील थी इस के विपरीत अबस, ज़ुबेआन् और ग़त्फ़ान के क़बायल ने भारी जमईयत के साथ मुस्लमानों पर आक्रमण किया थे। बदर के अवसर पर उन्हें अल्लाह ने मुशरिकीन पर फ़तह अता फ़रमाई। इस अवसर पर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों ने ईमान-ए-कामिल का सबूत दिया और दुश्मन पर फ़तह हासिल की। जिस तरह जंग बदर दूर रस नतायज की हामिल थी इसी तरह इस जंग में भी मुस्लमानों की फ़तह ने इस्लाम के भविष्य पर गहरा असर डाला।

(हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक उर्दू शेख़ मुहम्मद अहमद पानीपती पृष्ठ 150-151 मुद्रित इस्लामी कुतुब ख़ाना लाहौर)

बनू ज़ेबयान और बनू अबस ने इस पराजय की वजह से गुस्से में आकर अपने हाँ मौजूद मुस्लमानों पर अचानक हमला करके उनको निहायत बेदर्दी से तरह तरह के अज़ाब देकर शहीद कर डाला। उन्होंने यह बदला लिया कि जो निहत्ते मुस्लमान उनके इलाक़ों में रहते थे उनको मार दिया, शहीद कर दिया और उनके अनुकरण में दूसरे क़बायल ने भी ऐसा ही किया। इन अत्याचारों की सूचना पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़सम खाई कि वे मुशरेकीन को ख़ूब अच्छी तरह क़तल करेंगे और प्रत्येक क़बीले में से जिन्हों ने मुस्लमानों को क़तल किया था उन्हें उस के बदला में क़तल करेंगे।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 256 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत और राहनुमाई में ज़कात देने से इंकार करने वाले के हमलों का सद्द-ए-बाब होते ही अन्य कमज़ोर और असमंजस में पड़े हुए क़बायल के बाद दीगरे अपनी ज़कात लेकर मदीना की तरफ़ आने लगे। जब कमज़ोर क़बायल ने देखा कि जो ताक़तवर क़बायल हैं उनका ये हाल हो गया है तो जिन्हों ने ज़कात रोकी हुई थी वे ज़कात ले कर मदीना आने लगे। कोई क़बीला रात के पहले हिस्सा में ज़कात ले कर आने लगा और कोई रात के मध्य के हिस्सा में और कोई रात के आख़िरी हिस्सा में। जब ये लोग मदीना में आते तो प्रत्येक जमईयत के आने के अवसर पर लोग कहते कि ये डराने वाले मालूम होते हैं अर्थात कोई बुरी ख़बर लाने वाले, परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने प्रत्येक अवसर पर ये कहा कि ये ख़ुशख़बरी देने वाले हैं। हिमायत के लिए आए हैं नुक़्सान के लिए नहीं। इसलिए जब बाक़ायदा तौर पर ये मालूम हुआ कि ये जमाअतें इस्लाम के समर्थन के लिए आईं हैं और ज़कात के अम्वाल लेकर आने वाली जमाअतें हैं तो मुस्लमानों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हु बड़े मुबारक आदमी हैं आप हमेशा से बशारत देते चले आए हैं।

(उद्धरित तारीख़ तिब्री 2 पृष्ठ 256 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.)

इस अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये भी फ़रमाया कि बुरी ख़बर और बुरे इरादे से आने वाले तेज़ तेज़ चलते हैं जबकि ख़ुशख़बरी लाने वाले क़ाफ़िले आराम और इतमीनान से चलते हैं। मैं उनकी रफ़्तार से अंदाज़ा कर लेता था।

अलमेसर अल् इस्लामिया अज़ मुनीर मुहम्मद ग़ज़बान, पृष्ठ 50 मुद्रित दारुल इस्लाम 2015 ई.)

ज़कात देने से इंकार करने वाले के ख़िलाफ़ कामयाबी के बाद ज़कात की वसूलियों के विषय में तारीख़ तिब्री में लिखा है कि इस ज़माने में इस क़दर सदक़ात मदीना में मौसूल हुए जो मुस्लमानों की ज़रूरत से बच गए।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 257 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.)

इन्ही फ़ुतूहात और ख़ुशख़ारियों के दौरान हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो का लश्कर भी विजय और सफ़लता के साथ मदीना वापस लौट आया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हो के वापस आने के बाद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको मदीना में अपना नायब निर्धारित किया। यह भी कहा जाता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिना ज़मरी को अपना नायब निर्धारित किया और उनसे और उनकी फ़ौज से कहा कि तत्काल तुम भी आराम कर लो और अपनी सवारी के जानवरों को भी दम लेने दो और ख़ुद अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों के साथ सवार हो कर ज़ुल्कस्सा रवाना हुए परन्तु मुस्लमानों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ की कि हे ख़लीफ़ रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! आप रज़ियल्लाहु अन्हु से ख़ुदा का वास्ता देकर निवेदन करते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु स्वंय इस मुहिम पर न जाएं क्योंकि ख़ुदा-ना-ख़ासता यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हु को कोई हानि पहुंच गई तो सारा निज़ाम दरहम-बरहम हो जाएगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु किसी और को इस काम के लिए भेज दें ताकि यदि उसको कोई समस्या पेश आ जाए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु किसी दूसरे को इस की जगह निर्धारित कर सकें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम! मैं कदापि ऐसा नहीं करूँगा और मैं आप लोगों की ग़मख़्वारी अपनी जान से करूँगा।

(तारीख़ अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 253-256 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लुबनान 2012 ई.) सय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 282 मुद्रित अल् फुर्कान मुज़फ़्फ़र गढ़ पाकिस्तान)

फिर अहल-ए-रबज़ह पर हमले के बारे में लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सब इंतिज़ाम करके ज़ुल्हिसा और ज़ुल्ल्कस्सा चले गए। ज़ुल्कस्सा मदीना से चालीस मील की दूरी पर एक जगह है। नुमान रज़ियल्लाहु

अन्हो, अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो और सुवैद रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी अपनी जगह थे यहां तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबस के स्थान पर अहल-ए-रबज़ह को जालिया। शदीद जंग हुई। अंततः अल्लाह ने हारिस और औफ़ को शिकस्त दी जो मुर्राह, सालबा और अबस क़बायल के सरदार थे और हुतेया जीवित गिरफ़्तार कर लिया गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कुछ रोज़ अबस में क़ियाम किया और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबस की सरज़मीन को मुस्लमानों के घोड़ों की चरागाह बना दिया। इस जंग में शिकस्त खा कर बनू अबस और बनू ज़ुबयान तलीहा से जा मिले जो समीरा से चल कर उस वक़्त बुज़ाख़ह पर पहुंच कर ठहरा हुआ था। बुज़ाख़ह भी बनू असद के चशमा का नाम है यहां तलीहा असदी के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में अज़ीम मार्का हुआ था। (अल् तिब्री, भाग 2 पृष्ठ 256 मुद्रित दारुल क़ुतुब इल्मिया लबनान 2012 ई.)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 236 ज़व्वार अकैडमी पब्ली केशन्ज़् कराची 2003 ई.) (मौअज्जमुल बुल्दान, भाग 1 पृष्ठ 484-485 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर एक लेखक पराजित क़बाइल के आचार-व्यवहार के विषय में लिखता है कि अबस, ज़ुबेयान्, ग़त्फ़ान, बनी बक्र और मदीना के क़रीब बसने वाले दूसरे बाग़ी क़बायल के लिए मुनासिब था कि वे अपनी हडधर्मी और बग़ावत से बाज़ आ जाते। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की कामिल इताअत और अरकान-ए-इस्लाम की बजा आवरी का इक़रार करते और मुस्लमानों से मिलकर इस्लाम के विरोधियों के ख़िलाफ़ डट जाते। अक़ल का तक़ाज़ा भी यही था और वाक़ियात भी इसी का समर्थन करते थे। अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से से उनका ज़ोर टूट चुका था। रुम की सरहदों पर हुसूल-ए-कामयाबी के बायस अहल-ए-मदीना का रोब क़ायम हो चुका था। मुस्लमानों की क़ुव्वत और ताक़त बढ़ चुकी थी और अब वे इस कमज़ोरी के आलम में नहीं थे जो जंग बदर और इबतिदाई ग़ज़वात के दिनों में उन पर तारी थी। अब मक्का भी उनके साथ था और तायफ भी और इन दोनों शहरों की सियादत सारे अरब पर मुसल्लम थी। फिर ख़ुद उन क़बायल के मध्य ऐसे मुस्लमान कसरत से मौजूद थे जिन्हें बाग़ी किसी सूरत में साथ नहीं मिला सके थे और इस तरह उनकी पोज़ीशन बेहद कमज़ोर हो गई थी। लेकिन इस के बावजूद मुस्लमानों की दुश्मनी ने उनकी आँखें अंधी कर दी थीं और सूद और ज़ियाँ का एहसास दिलों से जाता रहा था। उन्होंने अपने वतनों को छोड़ दिया और क़बीला बनी असद के नबुव्वत के झूठे दावेदार तलीहा बिन ख़ूवीलद से जा मिले। जो मुस्लमान उन के मध्य मौजूद थे वे उन्हें उनके इरादों से बाज़ न रख सके। इन लोगों के पहुंच जाने से तलीहा और मुसल्मा की क़ुव्वत और ताक़त में बढ़ोतरी हो गई और यमन में बग़ावत के शोले ज़ोर-ओ-शोर से भड़कने लगे।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के फ़ैसले, अब्दुल्लाह मदनी, पृष्ठ 173-174 मुश्ताक़ बरकॉर्नर लाहौर)

बहरहाल यह हमेशा याद रहना चाहिए कि इन लोगों ने बग़ावत की थी और जंग की थी। केवल किसी दावे पर या किसी के दावे पर ये जंग नहीं हुई थी। बग़ावत का बदला लिया जा रहा था और जो जंग थी उस का उत्तर जंग से दिया जा रहा था।

मुनकरीन-ए-ज़कात पर फ़तह पाने और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बहादुरी और अज़म का वर्णन करते हुए अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं। उनकी एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद हम इस मुक़ाम पर खड़े थे कि यदि अल्लाह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो के माध्यम से हमारी मदद न फ़रमाता तो हलाकत यक़ीनी थी। हम सब मुस्लमानों का इत्तिफ़ाक़ कामिल से यह ख़्याल था कि हम ज़कात के ऊंटों की ख़ातिर दूसरों से जंग नहीं करेंगे और अल्लाह की इबादत में व्यस्त हो जाऐंगे यहां तक कि हमें मुकम्मल ग़लबा हासिल हो जाए लेकिन अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो ने ज़कात देने से इंकार करने वाले से लड़ने का अज़म कर लिया। उन्होंने मुनकरीन के सामने केवल दो बातें पेश कीं, तीसरी नहीं। पहली यह कि वे अपने लिए अपमान और धिक्कार क़बूल कर लें और यदि यह स्वीकार नहीं तो देशनिकाला या जंग के लिए तैयार हो जाएं। अपने लिए अपमान और धिक्कार स्वीकार करने का अर्थ यह था कि वे इक़रार करें कि उनके मक़्तूल दोज़ख़ी और हमारे जन्नती हैं वे हमें हमारे मक़्तूलों का ख़ून बहा अदा करें। हमने जो माल-ए-ग़नीमत उनसे वसूल किया उसकी वापसी का मुतालिबा न करें लेकिन जो माल उन्होंने हम से लिया है वे हमें वापस कर दें। और देशनिकाला की सज़ा भुगतने का अर्थ यह है कि शिकस्त खाने के बाद अपने इलाक़ों से निकल जाएं और दूर दराज़ स्थानों में जा कर ज़िंदगी बसर करें।

(उद्धरित हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ अज़ मुहम्मद हुसैन हैकल अनुवादक, पृष्ठ 118 शिरकत प्रिंटिंग प्रैस लाहौर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब कुछ अरब के क़बाइल ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके ख़िलाफ़ जंग करने के लिए तैयार हो गए। उस वक़्त हालत ऐसी नाज़ुक थी कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे इन्सान ने मश्वरा दिया कि इन लोगों से नरमी करनी चाहिए परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जवाब दिया।" इस का पहले भी वर्णन हो चुका है कि'' अबू क़हाफ़ा के बेटे की क्या ताक़त है कि वे इस हुक्म को निरस्त कर दे जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वाआला वसल्लम ने दिया है। ख़ुदा की क़सम यदि ये लोग रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में ऊंट का घुटना बाँधने की एक रस्सी भी ज़कात में दिया करते थे तो मैं रस्सी भी उनसे लेकर रहूँगा और उस वक़्त तक दम नहीं लूँगा जब तक वे ज़कात अदा नहीं करते।" आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने साथियों को कहा "यदि तुम इस विषय में मेरा साथ नहीं दे सकते तो बेशक न दो। मैं अकेला ही उनसे मुक़ाबला करूँगा।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "किस क़दर रसूल का अनुसरण है कि निहायत ख़तरनाक हालात में बावजूद इस के कि अकाबिर सहाबा लड़ाई के ख़िलाफ़ मश्वरा देते हैं फिर भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म को पूरा करने के लिए वे प्रत्येक किस्म का ख़तरा बर्दाश्त करने के लिए तैयार हो जाते हैं।" (तफ़सीर-ए- कबीर, भाग 8 पृष्ठ 108 -109)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक और जगह लिखा है, वर्णन फ़रमाया है कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब मुर्तद होने का उपद्रव फैल गया और केवल गांव में नमाज़ बाजमाअत रह गई और लश्कर भी शाम को भेज दिया गया तो भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़कात देने वालों के नाम इरशाद भेजा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में यदि कोई रस्सी देता था और अब नहीं देता तो मैं तलवार के ज़ोर से लूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जैसे बहादुर ने भी राय दी कि इस वक़्त ठीक समय नहीं कि ज़कात पर-ज़ोर दिया जाए परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी एक नहीं मानी। इससे मालूम हो सकता है कि ज़कात किस क़दर ज़रूरी है।" (मदारिज-ए-तक़्वा, अनवारुल उलूम, भाग 1 पृष्ठ 382-383)

यह बात जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाई है यह अपनी एक तक़रीर के दौरान वर्णन फ़रमाई थी जिसमें तक़्वा के मदारिज वर्णन किए थे। इस में वर्णन फ़र्मा रहे थे कि तक़्वा के कौन से मदारिज हैं, ज़कात की कितनी एहमीयत है और तक़्वा पर चलने वालों के लिए यह ज़रूरी है और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां ये भी फ़रमाया था कि अहमदियों को भी इस बात को याद रखना चाहिए कि ज़कात कितनी ज़रूरी है और इस का बाक़ायदा सम्मान करना चाहिए। (उद्धरित मदारिज-ए-तक़्वा, अनवारुल उलूम, भाग 1 पृष्ठ 383)

फिर एक जगह ज़कात के मसले को वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "एक बहुत अहम मसला ज़कात का है लेकिन लोगों ने इस को समझा नहीं। ख़ुदा तआला ने नमाज़ के बाद इस का हुक्म दिया है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि मैं ज़कात नहीं देने वालों से वही सुलूक करूँगा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुफ़्फ़ार से करते थे। ऐसे लोगों के मर्द ग़ुलाम बना लूँगा और उनकी औरतें लौंडियां। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद ऐसा इबतिला आया था कि अरब के तीन शहरों मक्का, मदीना और एक और शहर के इलावा सब इलाक़ा अरब का मुर्तद हो गया .. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि अच्छा जो लोग ज़कात के मुनकिर हैं उनसे सुलह कर लें। पहले दूसरे मुर्तद होने वालों से जंग हो जाए तो धीरे धीरे इनकी भी इस्लाह हो जाएगी। अव्वल ज़रूरत यही है कि झूठी नबुव्वत का दावा करने वालों का अंत किया जाए क्योंकि उनका फ़ित्ना सख़्त है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यदि लोग बकरी का बच्चा या ऊंट के घुटना बाँधने की रस्सी के बराबर भी ज़कात के माल में से अदा नहीं करेंगे जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अदा करते थे तो मैं उनसे जंग करूँगा और यदि तुम लोग मुझे छोड़ कर चले जाओ और जंगल के दरिंदे भी मुर्ताद होने वालों के साथ मिलकर हमला करेंगे तो मैं उनसे अकेला लड़ूँगा।"

(ख़िलाफ़त की बरकत, अनवारुल उलूम, भाग 2 पृष्ठ 222-223)

यह भी ख़िलाफ़त की बरकात में से है कि शरीयत को क़ायम करने के लिए कोशिश करनी चाहिए और ख़लीफ़-ए-वक़्त पूरी कोशिश करता है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक और जगह वर्णन फ़रमाते हैं। एक और एतराज़ लोग करते हैं परन्तु ख़ुदा तआला ने इस का उत्तर भी तेराह सौ वर्ष से पहले ही दे दिया है। एतराज़ करने वाले लोग कहते हैं कि شَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म है ख़िलाफ़त कहाँ से निकल आई? ख़िलाफ़त के लिए तो यह हुक्म नहीं है। लेकिन ये लोग याद रखें कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु पर जब ज़कात के विषय में आरोप लगाया गया तो वह भी इसी प्रकार का था कि خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म है। हाँ ये तो हुक्म नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुआ है। अब वे रहे नहीं और किसी को हक़ नहीं कि वे सदक़ात वसूल करे। जिसे लेने का हुक्म था वे फ़ौत हो गया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यही उत्तर दिया कि अब मैं सम्बोधित हूँ। अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अब सम्बोधित हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए, शरीयत तो क़ायम है इसलिए अब ख़लीफ़-ए-वक़्त सम्बोधित है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जब ये तक़रीर फ़र्मा रहे थे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इसी का अनुरूप हो कर अपने मोतरिज़ को मैं कहता हूँ कि अब मैं सम्बोधित हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यदि उस वक़्त यह जवाब सच्चा था और ज़रूर सच्चा था जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया तो यह भी दरुस्त है जो मैं कहता हूँ कि आज मैं सम्बोधित हूँ और यही उसूल हमेशा ख़िलाफ़त के साथ रहेगा। ये याद रखने वाली बात है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं यदि तुम्हारा एतराज़ दरुस्त हो तो इस पर क़ुरआन-ए-मजीद से बहुत से अहकाम तुम को निकाल देने पड़ेंगे और यह खुली खुली ज़लालत है।

(उद्धरित मंसब-ए-ख़िलाफ़त, अनवारुल उलूम, भाग 2 पृष्ठ 59 - 60)

ये बातें आप उस वक़्त वर्णन फ़र्मा रहे थे जब एक तक़रीर आपने मन्सब ख़िलाफ़त के विषय में की।

फिर एक और अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन फ़रमाया कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम "फ़ौत हुए तो बहुत से नादान मुस्लमान मुर्तद हो गए। तारीख़ों में आता है कि केवल तीन जगहें ऐसी रह गई थीं जहां मस्जिदों में बाजमाअत नमाज़ होती थी। इसी तरह देश के अक्सर लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया था और वे कहते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद किसी का क्या हक़ है कि वे हमसे ज़कात मांगे। जब यह विचार धरा सारे अरब में फैल गई और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसे लोगों पर सख़्ती करनी चाही तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और कुछ और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पहुंचे और जैसा कि पहले भी वर्णन हो चुका है "उन्होंने अर्ज़ किया कि यह वक़्त सख़्त नाज़ुक है। इस वक़्त की ज़रा सी ग़फ़लत बहुत बड़े नुक़्सान का मूजिब हो सकती है। इस लिए हमारी तजवीज़ यह है कि इतने बड़े दुश्मन का मुक़ाबला न किया जाए और जो ज़कात नहीं देना चाहते उनके साथ नरमी का सुलूक किया जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया कि तुम में से जो व्यक्ति डरता हो वे जहां चाहे जाए। ख़ुदा की क़सम यदि तुम में से एक व्यक्ति भी मेरा साथ नहीं देगा तो भी मैं अकेला दुश्मन का मुक़ाबला करूँगा और यदि दुश्मन मदीना के अंदर घुस आए और मेरे अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और दोस्तों को क़तल कर दे और औरतों की लाशें मदीना की गलियों में कुत्ते घसीटते फिरें तब भी मैं उनसे जंग करूँगा और इस वक़्त तक नहीं रुकूँगा जब तक ये लोग ऊंट का घुटना बाँधने की वे रस्सी भी जो पहले ज़कात में दिया करते थे न देने लग जाएं। इसलिए उन्होंने "अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने'' दुश्मन की शरारत का दिलेरी के साथ मुक़ाबला किया और आख़िर कामयाब हुए केवल इस लिए कि वह समझते थे कि यह काम मैं ने ही करना है। इसी लिए उन्होंने मश्वरा देने वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को कह दिया कि तुम में से कोई व्यक्ति मेरा साथ दे या न दे मैं अकेला दुश्मन का मुक़ाबला करूँगा यहां तक कि मेरी जान ख़ुदा तआला की राह में क़ुर्बान हो जाए। अत: जिस क़ौम के अंदर यह अज़्म पैदा हो जाए। "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "जिस क़ौम के अन्दर यह पैदा हो जाए वे प्रत्येक मैदान में जीत जाती है और दुश्मन कभी उस के सामने ठहर नहीं सकता।"

(क़ौमी तरक़्क़ी के दो अहम उसूल, अनवारुल उलूम, भाग 19 पृष्ठ 75-76)

और यही क़ौमी तरक़्क़ी का राज़ है जिसे हमेशा याद रखना चाहिए।

फिर एक और अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जब ज़कात के मसला के इख़तिलाफ़ की वजह से अरब के हज़ारों लोग मुर्तद हो गए और मुसल्मा मदीना पर हमला-आवर हुआ तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को जो उस वक़्त ख़लीफ़ा थे सूचना पहुंची कि मुसलेमा एक लाख की फ़ौज लेकर हमला-आवर हो रहा है। उस वक़्त कुछ लोगों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह मश्वरा दिया कि चूँकि उस वक़्त हम एक नाज़ुक दौर में से गुज़र रहे हैं और ज़कात के मसला पर इख़तिलाफ़ की वजह से लोग इर्तिदाद इख़तियार करते जा रहे हैं और इधर मुसलेमा एक बहुत भारी फ़ौज के साथ हमला-आवर हुआ है इस लिए इन हालात के पेश-ए-नज़र मसलेहत यही है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ज़कात का मुतालिबा सर-ए-दस्त न करें और उन लोगों से सुलह कर लें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इन ख़दशात की भी परवाह नहीं की और परवाह न करते हुए इन मश्वरा देने वालों से कहा क्या तुम मुझे वह बात मनवाना चाहते हो जो ख़ुदा तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहकाम के सरीह ख़िलाफ़ है? ज़कात का हुक्म-ए-ख़ुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से है। इस लिए मेरा कर्तव्य है कि मैं ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहकाम के रक्षा के लिए प्रत्येक मुम्किन कोशिश करूँ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर कहा कि हालात का तक़ाज़ा यही है कि सुलह कर ली जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया यदि आप नहीं लड़ना चाहते और दुश्मन के मुक़ाबला की ताब नहीं ला सकते तो आप लोग जाएं और अपने घरों में जा कर बैठें। ख़ुदा की क़सम! मैं दुश्मन से उस वक़्त तक अकेला लड़ूंगा जब तक वे ऊंट के घुटने बाँधने की रस्सी भी यदि ज़कात में देनी थी उसे अदा नहीं कर देते और जब तक मैं इन लोगों को ज़कात देने का क़ाइल न कर लूँगा उनसे कभी सुलह नहीं करूँगा हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "अत: हक़ीक़ी ईमान की यही अलामत हुआ करती है।"

(हमारे ज़िम्मा समस्त दुनिया को फ़तह करने का काम है, अनवारुल उलूम, भाग 18 पृष्ठ 458)

और अत: यही ईमान है। यदि हम में होगा तो हम दुनिया में इस्लाम का हक़ीक़ी संदेश पहुंचा सकेंगे और कामयाब इंशा-ए-अल्लाह होंगे।

फिर एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी वफ़ात के बाद अरब के क़बायल ने बग़ावत कर दी और उन्होंने ज़कात देने से इन्कार कर दिया। वह भी यही दलील देते थे कि ख़ुदा तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा किसी और को ज़कात लेने का इख़तियार ही नहीं दिया। इसलिए वो फ़रमाता है।" अर्थात अल्लाह तआला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित कर के फ़रमाता है कि "... हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तू उनके अम्वाल का कुछ हिस्सा बतौर ज़कात ले। यह कहीं ज़िक्र नहीं कि किसी और को भी रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ज़कात लेने का इख़तियार है परन्तु मुस्लमानों ने उनकी इस दलील को तस्लीम नहीं किया हालाँकि वहां ख़ुसूसीयत के साथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ही सम्बोधित किया गया है। बहरहाल जो लोग उस वक़्त मुर्तद हुए उनकी बड़ी दलील यही थी कि ज़कात लेने का केवल मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इख़तियार हासिल था किसी और को नहीं और इस की वजह यही धोखा था कि निज़ाम से ताल्लुक़ रखने वाले अहकाम हमेशा के लिए काबिल-ए-अमल नहीं बल्कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ वे अहकाम विशेष थे। परन्तु" आप रज़ियल्लाहु अन्हुफ़रमाते हैं कि "यह ख़्याल बिल्कुल ग़लत है और असल हक़ीक़त यही है कि जिस तरह नमाज़ रोज़ा के अहकाम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक ख़त्म नहीं हो गए इसी तरह क़ौमी या मुल्की निज़ाम से ताल्लुक़ रखने वाले अहकाम भी आपकी वफ़ात के साथ ख़त्म नहीं हो गए और नमाज़ बाजमाअत की तरह जो एक इजतिमाई इबादत है इन अहकाम के विषय में भी ज़रूरी है कि हमेशा मुस्लमानों में आपके नायबीन के माध्यम से उन पर अमल होता रहे।"

(ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम, भाग 15 पृष्ठ 30-31)

फिर एक अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी फ़रमाया कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वफ़ात पाई और

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा निर्धारित हुए तो उस वक़्त सारा अरब मुर्तद हो गया। सिवाए मक्का और मदीना के और एक छोटे से क़स्बा के समस्त लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और कहा कि अल्लाह तआला ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से फ़रमाया था कि خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً उनके मालों से सदक़ा ले। किसी और को ये इख़तियार नहीं कि हमसे ज़कात वसूल करे। ग़रज़ सारा अरब मुर्तद हो गया और वे लड़ाई के लिए चल पड़ा। केवल मुर्तद नहीं हो गया बल्कि लड़ाई के लिए चल पड़ा। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में जबकि इस्लाम कमज़ोर था परन्तु क़बाइल-ए-अरब मुतफ़र्रिक़ तौर पर हमला करते थे। कभी एक गिरोह ने हमला कर दिया और कभी दूसरे ने। जब ग़ज़व-ए-अहज़ाब के अवसर पर कुफ़्फ़ार के लश्कर ने इजतिमाई रंग में मुस्लमानों पर हमला किया तो उस वक़्त तक इस्लाम बहुत कुछ ताक़त पकड़ चुका था जबकि अभी इतनी ज़्यादा ताक़त हासिल नहीं हुई थी कि उन्हें आइन्दा के लिए किसी हमले का डर ही नहीं रहता। इसके बाद जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का फ़तह करने के लिए गए तो उस वक़्त अरब के कुछ क़बायल भी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी मदद के लिए खड़े हो गए। इस तरह ख़ुदा ने तदरीजी तौर पर दुश्मनों में जोश पैदा किया ताकि वे इतना ज़ोर न पकड़ लें कि सब मुल्क पर छा जाएं लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना में यकदम समस्त अरब मुर्तद हो गया। केवल मक्का और मदीना और एक छोटा सा क़स्बा रह गए। बाक़ी समस्त मुक़ामात के लोगों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया और वे लश्कर लेकर मुक़ाबला के लिए निकल खड़े हुए। केवल ज़कात का इन्कार नहीं किया बल्कि लश्कर लेकर मुक़ाबले के लिए निकल खड़े हुए। कुछ जगह तो उनके पास एक एक लाख का भी लश्कर था। परन्तु इधर केवल दस हज़ार का एक लश्कर था और वे भी शाम को जा रहा था और यह वह लश्कर था जिसे अपनी वफ़ात के क़रीब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रूमी इलाक़ा पर हमला करने के लिए तैयार किया था और उसामा को इस का अफ़्सर निर्धारित किया था। बाक़ी लोग जो रह गए थे वह या तो कमज़ोर और बुड्ढे थे और या फिर गिनती के कुछ नौजवान थे। ये हालात देखकर सहाबा ने सोचा कि यदि ऐसी बग़ावत के वक़्त उसामा का लश्कर भी रवाना हो गया तो मदीना की हिफ़ाज़त का कोई सामान नहीं हो सकेगा। इसलिए अकाबिर सहाबा का यह वफ़द हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। पहले भी वर्णन हो चुका है और अर्ज़ किया कि कुछ अरसा के लिए इस लश्कर को रोक लिया जाए। जब बग़ावत फ़िरौ हो जाए तो फिर बेशक उसे भेज दिया जाए परन्तु उस वक़्त उस का भेजना ख़तरे से ख़ाली नहीं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने निहायत गुस्से की हालत में फ़रमाया कि क्या तुम यह चाहते हो कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद अबू क़ुहाफ़ा का बेटा सबसे पहला काम ये करे कि जिस लश्कर को रवाना करने का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था उसे रोक ले। बहरहाल आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा यह तो रवाना होगा और मैं इस लश्कर को ज़रूर रवाना करूँगा जिसको रवाना करने का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है। यदि तुम दुश्मन की फ़ौजों से डरते हो तो नि:संदेह मेरा साथ छोड़ दो। मैं अकेला समस्त दुश्मन का मुक़ाबला करूँगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا की सदाक़त का बड़ा सबूत है। अर्थात ख़िलाफ़त पर क़ायम होने वाले या ख़िलाफ़त के साथ रहने वाले ये मोमिन मेरी इबादत करेंगे और मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे। और यह वे हालत है जो ख़िलाफ़त के निज़ाम के साथ जारी है और जारी रहेंगे।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि दूसरा प्रश्न ज़कात का था। सहाबा ने अर्ज़ किया कि यदि आप लश्कर नहीं रोक सकते तो केवल इतना कर लीजीए कि इन लोगों से अस्थाई सुलह कर लें और उन्हें कह दें कि हम इस वर्ष तुम से ज़कात नहीं लेंगे और इस दौरान में उनका जोश ठंडा हो जाएगा और तफ़र्रुक़ा के मिटने की कोई सूरत पैदा हो जाएगी। लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ऐसा कदापि नहीं होगा। ये बात भी नहीं मानी। इस पर सहाबा ने कहा कि यदि जैश-ए-उसामा भी चला गया और उन लोगों से आरिज़ी सुलह भी न की गई तो फिर दुश्मन का कौन मुक़ाबला करेगा? मदीना में तो ये बुड्ढे और कमज़ोर लोग हैं और ये केवल कुछ नौजवान हैं वह भला लाखों का क्या मुक़ाबला कर सकते हैं? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया। हे दोस्तो! यदि तुम उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते तो अबू बकर अकेला उनका मुक़ाबला करने के लिए निकल खड़ा होगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि यह दावा उस व्यक्ति का है जिसे फ़ुनून-ए-जंग से कुछ ज़्यादा वाक़फ़ीयत नहीं थी और जिसके विषय में आम तौर पर यह ख़्याल किया जाता था कि वह दिल का कमज़ोर है। फिर यह जुर्रत, यह दिलेरी, यह यक़ीन और यह वसूक़ इस में कहाँ से पैदा हुआ। इसी बात से यह यक़ीन पैदा हुआ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझ लिया था कि मैं ख़िलाफ़त के मुक़ाम पर ख़ुदा तआला की तरफ़ से खड़ा हुआ हूँ और मुझ पर ही समस्त काम की ज़िम्मेदारी है।

अत: मेरा कर्तव्यहै कि मैं मुक़ाबला के लिए निकल खड़ा हूँ। कामयाबी देना या न देना ख़ुदा तआला के इख़तियार में है। यदि वह कामयाबी देना चाहेगा तो आप दे देगा और यदि नहीं देना चाहेगा तो सारे लश्कर मिलकर भी कामयाब नहीं कर सकते।

(उद्धरित ख़िलाफ़त-ए-राशिदा, अनवारुल उलूम, भाग 15 पृष्ठ 543 से 545 मुद्रित क़ादियान 2008 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के फ़ैसले के कैसे ज़बरदस्त नताइज पैदा हुए इस बारे में भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा की खिलाफ-ए-मर्ज़ी हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को लश्कर समेत मौअता की तरफ़ रवाना कर दिया। इसलिए चालीस दिन बाद यह मुहिम अपना काम पूरा कर के फ़ातिहाना शान से मदीना वापस आई और ख़ुदा की नुसरत और फ़तह को नाज़िल होते सबने अपनी आँखों से देख लिया। फिर उस मुहिम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु झूठे नबुव्वत के दावा करने वालों के फ़ित्ना की तरफ़ मुतवज्जा हुए और इस फ़ित्ना की ऐसी ऐसी सरकूबी की कि उसे कुचल कर रख दिया और यह फ़ित्ना बिल्कुल मालिया-मेट हो गया। इसके बाद यही हाल मुर्तद होने वालों का हुआ। और सहाबा किबार भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से इख़तिलाफ़ कर रहे थे और कहते थे कि जो लोग तौहीद और रिसालत का इक़रार करते हैं और केवल ज़कात देने के मुनकिर हैं उन पर किस तरह से तलवार उठाई जा सकती है लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने निहायत साहस और दिलेरी से काम लेते हुए फ़रमाया कि यदि आज ज़कात न देने की आज्ञा दे दी तो आहिस्ता-आहिस्ता लोग नमाज़ रोज़े को भी छोड़ बैठेंगे और इस्लाम महिज़ नाम का रह जाएगा। अल ग़र्ज़ ऐसे हालात में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़कात देने से इंकार करने वाले का मुक़ाबला किया और अंजाम यही था कि इस मैदान में भी आपको फ़तह और नुसरत हासिल हुई और समस्त बिगड़े हुए लोग राह-ए-हक़ की तरफ़ लौट आए।

(उद्धरित तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 10 पृष्ठ 478)

अभी यह सिलसिला चल रहा है। इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा इस का वर्णन करूँगा।

जैसा कि मैं हमेशा तहरीक कर रहा हूँ आजकल दुनिया के हालात के लिए दुआएं करते रहें, उनमें कमी न करें। विशेषता यह दुआ करें कि दुनिया अपने पैदा करने वाले को पहचानने लग जाए, यही एक हल है दुनिया को तबाही से बचाने का। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और हमारी दुआएं भी क़बूल फ़रमाए।

मैं एक मरहूम का वर्णन भी करना चाहता हूँ। जुमा के बाद जनाज़ा पढ़ाऊंगा। यह आदरणीय मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब हैं जो जामिआ कैनेडा के प्रिंसिपल भी रहे हुए हैं और मुबल्लिग़ इंचार्ज कैनेडा भी हैं। 8 मार्च को उनकी वफ़ात सतासी वर्ष की उम्र में हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। बड़े बेनफ़्स, मुतवक्किल अल्लाह, दुआ-गो, क़नाअत पसंद इन्सान थे। बड़े दरवेश सिफ़त थे। उनको देखकर मुझे हमेशा हक़ीक़ी बुज़ुर्ग देखने का एहसास पैदा होता था।

उनके ख़ानदानी परिचय के बारे में भी वर्णन कर दूं कि आप सिलसिला के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कामयाब मुबल्लिग़ मौलाना नज़ीर अहमद अली साहिब और आदरणीया आमना बेगम साहिबा के दूसरे साहबज़ादे थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरंभ उनके दादा हज़रत बाबू फ़क़ीर अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के माध्यम से हुआ था जिन्हों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की थी और बाद में वह क़ादियान में पहले स्टेशन मास्टर निर्धारित हुए थे। क़ादियान में उनके दादा का मकान भी था जो फ़क़ीर मंज़िल के नाम से मारूफ़ था। मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब के पिता हज़रत मौलाना नज़ीर अहमद अली साहिब को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद अनुसार 1929 ई. में पहले घाना ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और इसके बाद उनका चयन सेरा लिओन में हुआ। 1943 ई. में उनके पिता हज़रत मौलाना नज़ीर अहमद अली साहिब सेरा लिओन वापस जा रहे थे तो मुबारक नज़ीर साहिब भी अपने पिता और माता के साथ सेरा लिओन के सफ़र पर रवाना हुए। इस सफ़र के दौरान एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िया भी हुआ और मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब इसका वर्णन करते हैं। समुद्री जहाज़ के माध्यम से ये सफ़र तीन माह का था। उस वक़्त मुबारक नज़ीर साहिब की आयु ग्यारह वर्ष की थी। दौरान-ए-सफ़र उनकी तबीयत ख़राब हुई और बीमारी के आसार ऐसे ज़ाहिर हुए कि लगता था कि अब जान नहीं बचेगी। समुद्री जहाज़ का सफ़र था जैसा कि मैंने कहा। तो जहाज़ पर चढ़ने लगे या जहाज़ बदला या उस वक़्त चढ़ने लगे थे या सफ़र से पहले की बात है बहरहाल जहाज़ पर चढ़ने से पहले ये बीमार हो चुके थे और जहाज़ को इंतिज़ामिया ने उनकी हालत देखकर उनके पिता साहिब से कहा कि आपका बेटा अधमरा है। यह तो तक़रीबन ख़त्म हुआ-हुआ है। यदि दौरान-ए-सफ़र यह फ़ौत हो गया तो हमारे पास तो जहाज़ में लाश को रखने के लिए कोई ठंडी जगह नहीं है, कोई सहूलत नहीं है। इसलिए हम आपके बच्चे की वजह से आपको नहीं ले जा सकते। मौलाना साहिब ने इसरार किया कि मुझे ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु का हुक्म है और मैंने प्रत्येक हाल में इस जहाज़ पर सवार होना है, फिर जहाज़ को इंतिज़ामीया ने इस शर्त पर उन्हें जहाज़ पर चढ़ने की आज्ञा दी कि वह यह लिख कर दें कि यदि उनका बेटा दौरान-ए-सफ़र मर गया तो उस की लाश को समुंद्र में फेंकने की आज्ञा होगी। जब यह शर्त जहाज़ के कैप्टन ने कही तो मुबारक नज़ीर साहिब की माता रोने लगीं। सकते में आ गईं और मौलाना नज़ीर अली साहिब से कहने लगीं कि यह बेटा है, हमारा है। किसी और जहाज़ पर चले जाऐंगे। मौलाना नज़ीर अली साहिब ने अपनी बीवी को तसल्ली दी कि में एक मुबल्लिग़ हूँ जिसे हज़रत साहिब ने एक ज़िम्मेदारी देकर भेजा है। मुझे क्या मालूम कि कब दूसरा जहाज़ मिले। तुम तसल्ली रखो। बीवी को कहा तुम तसल्ली रखो मुबारक को कुछ नहीं होगा। यह कह कर उन्होंने जहाज़ के कप्तान से पूर्ण विश्वास के साथ कहा, कहाँ दस्तख़त करने हैं लाओ काग़ज़ और फिर कैप्टन को कहा कि यदि यह मर गया तो उसे समुंद्र में फेंक देना लेकिन साथ मैं तुम्हें यह भी बता दूं कि उसे कुछ भी नहीं होगा। यह वह ख़ुदा पर विश्वास था जो आपके पिता को ख़ुदा तआला की ज़ात पर था कि मैं एक वाक़िफ़ ज़िंदगी हूँ, उसके दीन की इशाअत के लिए निकला हूँ, ख़ुदा तआला ज़रूर मेरी मदद और मेरे घरवालों की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। इसलिए ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से वह ग्यारह साला बच्चा न केवल ज़िंदा रहा बल्कि उसने सतासी वर्ष उम्र पाई और इस्लाम और अहमदियत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। अपने आबा के नक़्श-ए-क़दम पर चलते हुए अपनी ज़िंदगी भी वक़्फ़ की। उसकी सआदत भी पाई और ख़िदमत दीन के मैदान में ख़ुद भी तवक्कुल अल्लाह की आला मिसालें क़ायम कीं।

ग्रेजवेशन करने के बाद उनको सरकारी महकमे में अच्छी नौकरी भी मिल गई थी जहां कुछ अरसा उन्होंने काम किया फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक पर अल्फ़ज़ल में यह ऐलान पढ़ा कि वक़्फ़ करें, चाहे आरिज़ी वक़्फ़ करें। तो अपने काम से अस्तीफ़ा देकर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अपने आपको आरिज़ी वक़्फ़ के लिए पेश किया और हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के इरशाद की रोशनी में 1963 ई. में पहली दफ़ा वक़्फ़ आरिज़ी के लिए सेरा लिओन चले गए जहां एक लंबा अरसा आपके पिता हज़रत मौलाना नज़ीर अली साहिब को भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिल चुकी थी और उनकी क़ब्र भी यहीं थी, वहीं दफ़न होए थे मौलवी नज़ीर अली साहिब। सेरा लिओन पहुंचते ही सबसे पहले अपने पिता की क़ब्र पर हाज़िर हुए। उस वक़्त उन्हों ने अपने पिता के वे शब्द याद किए जो मुकर्रम मौलाना नज़ीर अली साहिब ने 26 नवंबर 1945 ई. को अपनी एक रूह-परवर तक़रीर में कहे थे। उन्होंने कहा था कि आज हम ख़ुदा तआला के लिए जिहाद करने और इस्लाम को मग़रिबी अफ़्रीक़ा में फैलाने के लिए जा रहे हैं। मौत फ़ौत इन्सान के साथ लगी हुई है। हम में से यदि कोई फ़ौत हो जाए तो आप लोग ये समझें कि दुनिया का कोई दूर दराज़ हिस्सा है जहां थोड़ी सी ज़मीन अहमदियत की मिल्कियत है। अहमदी नौजवानों का कर्तव्य है कि उस तक पहुँचीं और इस उद्देश्य को पूरा करें जिसकी ख़ातिर इस ज़मीन पर हमने क़ब्रों की शक्ल में क़बज़ा किया होगा। कहने का अर्थ यह था कि थोड़ी सी ज़मीन है अहमदियत की जहां एक अहमदी मुबल्लिग़ की क़ब्र है और इस क़ब्र की वजह से इस ज़मीन पर इस का क़बज़ा है। अत: हमारी क़ब्रों की तरफ़ से यही मुतालिबा होगा कि अपने बच्चों को ऐसे रंग में ट्रेनिंग दें कि जिस उद्देश्य के लिए हमारी जानें लगी हुईं उसे वे पूरा करें। इसलिए अपने पिता बुज़ुर्गवार की वसीयत को पूरा करते हुए मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब वहां पहुंचे और अपने पिता की क़ब्र पर हाज़िर हो कर कहा कि लब्बैक मैं हाज़िर हूँ और आपकी पुकार का उत्तर देने के लिए आया हूँ।

सेरा लिओन के विभिन्न मुक़ामात में आपको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस के बाद ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे पर 1985 ई. में पाकिस्तान वापस आ गए। 1985 ई. में जब अफ़्रीक़ा से वापस आए तो फिर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे की ख़िदमत में उन्होंने आरिज़ी की बजाय मुस्तक़िल ज़िंदगी वक़्फ़ करने की दरख़ास्त दी जिसे हुज़ूर ने क़बूल फ़रमाया और फिर 1988 ई. में उनको बतौर मुबल्लिग़ कैनेडा भिजवाया गया जहां ये विभिन्न जगहों पर मुबल्लिग़ के तौर पर ख़िदमत सरअंजाम देते रहे। 2003 ई. में जब यह फ़ैसला हुआ कि जामिआ कैनेडा खोला जाए जिस की मंज़ूरी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे ने दे दी थी और प्रिंसिपल के तौर पर उनका चयन भी किया था लेकिन जामिआ खुला नहीं था उनकी ज़िंदगी तक। जो बाद में फिर मेरे वक़्त में खुला और फिर मैंने भी इसी की तौसीक़ कर दी जो हज़रत ख़लीफ़ा राबा ने उनको निर्धारित किया था कि प्रिंसिपल यही रहेंगे। बहरहाल यह जामिआ अहमदिया कैनेडा के पहले प्रिंसिपल थे। फिर 2009 ई. तक उन्होंने जामिआ में बतौर प्रिंसिपल ख़िदमत की। 2010 ई. में मिशनरी इंचार्ज कैनेडा की ख़िदमत पर उनको मैंने निर्धारित किया और 2018 ई. तक उनको भरपूर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। कुल अरसा ख़िदमत उनका उनसठ वर्ष पर आधारित है। आरिज़ी वक़्फ़ भी उनका मुस्तक़िल वक़्फ़ ही था। इसी तरह मौलाना साहिब को बतौर मर्कज़ी नुमाइंदा कई जलसों और प्रोग्रामों में शिरकत की तौफ़ीक़ मिली और उनकी तक़रीरें अपने और ग़ैर बहुत पसंद किया करते थे, बहुत असर करने वाली तक़रीरें हुआ करती थीं। सुनने वालों को बिल्कुल अपनी तरफ़ खींच लिया करते थे। 2016 ई. में उनको मेरी नुमाइंदगी में गोइटे माला में नूर हस्पताल का संग-ए-बुनियाद रखने की भी तौफ़ीक़ मिली। फिर उनके तब्लीग़ी मज़ामीन भी शाय होते थे कैनेडा के नैशनल न्यूज़, टोरंटो स्टार और आटवा सिटीज़न जैसे अख़बारात में प्रकाशित होते थे। मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक तजल्लियात-ए- इलाही और फ़तह इस्लाम का अंग्रेज़ी अनुवाद करने की तौफ़ीक़ मिली। फिर गल्फ़ क्राइसिस जो हज़रत ख़लीफ़ा राबा रज़ियल्लाहु अन्हु की किताब थी उसका भी उन्होंने अनुवाद किया।

उनके परिजनों में उनकी पत्नी अम्तुल हफ़ीज़ नज़ीर साहिबा और तीन बेटे और दो बेटियां शामिल हैं। जैसा कि मैंने वर्णन किया कि यह बहुत सी ख़सुसीआत के हामिल थे और एक मिसाली वाक़िफ़ ज़िंदगी थे और मुबल्लिग़ के लिए विशेषता एक नमूना थे। उनकी ज़िंदगी दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने की एक अमली तस्वीर थी। हमेशा जमाअत की ख़िदमत की और ख़लीफ़ा वक़्त की इताअत को अपना उद्देश्य बनाया। जैसा कि मैंने कहा भाषण की प्रतिभा में भी महारत रखते थे उर्दू और अंग्रेज़ी दोनों ज़बानों में बड़े क़ादिर-उल-कलाम थे। बहुत प्रभावी तक़रीरें होती थीं। उनकी पत्नी अम्तुल हफ़ीज़ साहिबा लिखती हैं कि सारी ज़िंदगी बहुत नेकी और तक़्वा के साथ उन्होंने बसर की। जमाअत के एक-एक पैसे का दर्द रखते थे और अपनी ज़िंदगी निहायत सादगी से गुज़ारी। सेरा लिओन छोड़ने के बाद भी वहां के बहुत से गरबा की मदद मुस्तक़िल तौर पर ख़ामोशी से करते। कहती हैं मैं इस बात की गवाह हूँ कि वह बेहतरीन वाक़िफ़ ज़िंदगी के साथ साथ बेहतरीन पति और निहायत शफ़ीक़ बाप भी थे। हमेशा इस बात की फ़िक्र में रहे कि जमाअत मुझ पर इतना ख़र्च कर रही है तो मैं किस तरह फ़ायदा पहुंचा सकता हूँ। अक्सर इस बात को भी दोहराते थे कि मैं ख़लीफ़-ए-वक़्त की नाराज़गी किसी सूरत में भी बर्दाश्त नहीं कर सकता।

उनके बच्चों के भी तास्सुरात हैं सभी ने अक्सर यही लिखा है कि पिता साहिब का अल्लाह तआला पर और आख़िरत पर बड़ा पक्का ईमान था। ख़िलाफ़त की इताअत और निज़ाम जमाअत पर पूर्ण विश्वाश था। फिर अल्लाह तआला पर बहुत ज़्यादा तवक्कुल था अक्सर कहा करते थे कि मुझे अल्लाह तआला कभी नहीं छोड़ेगा और हमेशा मेरी मदद को आएगा और अल्लाह तआला का सुलूक भी उनसे यही था। माली तहरीकात के लिए जहां भी जाते, बाद में जब मिशनरी इंचार्ज थे उस वक़्त भी अमीर साहिब जहां भी भेजते थे या उस के इलावा रिटायरमैंट के बाद भी जब उनकी तबीयत ख़राब हुई है कभी कभी उनसे फ़ायदा उठाया जाता था, जहां भी ये जाते थे माली क़ुर्बानी की तहरीक करते थे और लोगों को असर होता था। इसलिए कि पहले ख़ुद इस में हिस्सा डालते थे फिर बाक़ी जमाअत को तलक़ीन करते थे।

उनकी बड़ी बेटी कहती हैं कि ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ मज़बूत ताल्लुक़ रखने का मश्वरा देते थे। हमेशा हम में निज़ाम-ए-जमाअत की मुहब्बत और सम्मान पैदा करने की कोशिश करते रहे। उनकी यह ख़ाहिश थी कि हम हमेशा ख़लीफ़तुल मसीह की प्रत्येक हिदायत पर अमल करें। कहती हैं कि शाज़ ही कोई ऐसी मज्लिस होती थी जिसमें इन बातों की तलक़ीन न करते। फिर पोते पोतीया नवासे नवासियाँ जब भी इकट्ठे होते तो उन सबको पता था कि हमें बिठा कर आप नसीहत करेंगे और नसीहत में हमेशा यह संदेश होता था कि हमें दुनियावी कामो में नहीं पड़ना चाहिए, हमें हमेशा इस बात को यक़ीनी बनाना चाहिए कि हमारा ताल्लुक़ अल्लाह तआला और ख़िलाफ़त से है। फिर कहती हैं कि हमें बताते थे कि जमाअत का काम तो मुकम्मल हो कर रहेगा इस में तो कोई शक नहीं यदि आप लोग जमाअत की ख़िदमत नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला और लोगों को इस से बेहतर काम करने के लिए ले आएगा।

फिर उनकी छोटी बेटी एक वाक़िया लिखती हैं कि सेरा लिओन में एक मस्जिद के निर्माण के वक़्त जब मज़दूरों ने तनख़्वाह का मुतालिबा किया, तामीर हो रही थी, पैसे थोड़े रह गए, उस वक़्त पिता साहिब के पास देने के लिए रक़म मौजूद नहीं थी जबकि मौलाना मुबारक नज़ीर साहिब ने उनसे कहा कि वे कल आएं तो उनको उनकी तनख़्वाह दे देंगे, जो उजरत है वे दे देंगे। जब सुबह हुई और मुबारक नज़ीर साहिब अपने घर से बाहर निकले तो देखते हैं कि मज़दूर तो सामने खड़े इंतिज़ार कर रहे हैं और पैसे का इंतिज़ाम अभी तक नहीं हुआ था। इस पर उन्होंने मज़दूरों से कहा कि अभी मेरे पास पैसे नहीं हैं लेकिन मैं दुआ कर रहा हूँ थोड़ा सा इंतज़ार करो । इंशा अल्लाह जल्द अल्लाह तआला इंतिज़ाम फ़रमाएगा। इसी दौरान कहते हैं एक गाड़ी तेज़ी से उनके पास आई और उनको एक लिफ़ाफ़ा दिया जिसमें रक़म थी और उनसे कहा कि किसी व्यक्ति ने सुना था कि आप मस्जिद बना रहे हैं इसलिए उसने ये पैसे भिजवाए हैं, ये आप रख लें। इस से पहले कि पिता साहिब उस से पूछते कि किस ने पैसे दिए हैं वह गाड़ी लिफ़ाफ़ा दे के तेज़ी से चली गई। कहते हैं उनको इस बात पर यक़ीन हो गया कि अल्लाह तआला ने उनकी दुआ सुन ली है। इस तरह उन्होंने मज़दूरों को रक़म अदा कर दी।

तो यह था उनका अल्लाह तआला पर तवक्कुल और फिर अल्लाह तआला का उनसे सुलूक भी। इस किस्म के तवक्कुल और अल्लाह तआला के उनके साथ सुलूक के बेशुमार वाक़ियात हैं जो लोगों ने लिखे हैं विभिन्न लोगों ने मुरब्बियान ने भी लिखे हैं। जैसा कि मैंने कहा निसंदेह वे एक आलम बाअमल थे और इसी लिए उनकी तक़रीरों का लोगों पर असर भी बहुत होता था लेकिन ख़िलाफ़त के सामने उनकी आजिज़ी की इंतिहा थी।

अल्लाह तआला उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए, उनकी औलाद और नसल को उनके नक़्श-ए-क़दम पर चलाए। उनकी दुआओं का उनकी औलाद को वारिस बनाए, नसल को वारिस बनाए और अल्लाह तआला जमाअत को भी इन जैसे बेलौस ख़िदमत करने वाले अता फ़रमाता रहे। विशेषता जामेंआ कैनेडा के जो पढ़े हुए मुरब्बियान हैं उन्होंने उनके साथ बहुत से वाक़ियात लिखे हैं। किस तरह वे तर्बीयत करते थे, किस तरह उन्होंने तब्लीग़ करना सिखाया, किस तरह अख़लाक़ सिखाय, किस तरह दीन सिखाया। बहरहाल इन मुरब्बियान ने बहुत फ़ैज़ पाया। तो ये उनको याद रखना चाहिए कि यह वाक़ियात केवल याद रखने के लिए या वर्णन करने के लिए न हो बल्कि उन मुरब्बियान को भी इन चीज़ों का अमली उदाहरण बनना चाहिए। अल्लाह तआला उनको भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

फ़रमाया : وَ اِنۡ مِّنۡ اُمَّۃٍ اِلَّا خَلَا فِیۡہَا نَذِیۡرٌ (सूरः अल् फ़ातिर सूरः नंबर 35, आयत नंबर 25) और कोई उम्मत नहीं परन्तु ज़रूर उस में कोई डराने वाला गुज़रा है अर्थात अल्लाह तआला ने हर क़ौम में कोई न कोई नज़ीर और हादी भेजा है एक और आयत में अल्लाह तआला ने फ़रमाया

وَّ لِکُلِّ قَوۡمٍ ہَادٍ (सूरत राद, सूरः नंबर 13 आयत नंबर 8) अनुवाद और हर क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक होता है।

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रश्न किया कि

یا رسول اللہ کم الانبیاء؟ قال ما ئۃ الف وأربعہ و عشرون ألفًا (تفسیرالقرآن العظیم للامام الجلیل اسما عیل بن کثیر 774ھجری،تفسیر سورۃ النساء)

कि दुनिया में कितने नबी आए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया एक लाख चौबीस हज़ार नबी अल्लाह ने इस दुनिया में भिजवाए। और उनकी आमद का उद्देश्य अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद में फ़रमाया :

وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِیۡ کُلِّ اُمَّۃٍ رَّسُوۡلًا اَنِ اعۡبُدُوا اللّٰہَ وَاجۡتَنِبُوا الطَّاغُوۡتَ ۚ فَمِنۡہُمۡ مَّنۡ ہَدَی اللّٰہُ وَمِنۡہُمۡ مَّنۡ حَقَّتۡ عَلَیۡہِ الضَّلٰلَۃُ ؕ فَسِیۡرُوۡا فِی الۡاَرۡضِ فَانۡظُرُوۡا کَیۡفَ کَانَ عَاقِبَۃُ الۡمُکَذِّبِیۡنَ

(सूरः अल् नहल, सूरः नंबर 16 आयत नंबर 37)

अनुवाद : और निसंदेह हम ने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और बुतों से इजतिनाब करो। अतः उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और उन्ही में ऐसे भी हैं जिन पर गुमराही वाजिब हो गई। अतः ज़मीन में फिरों फिर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम कैसा था।

(शेष आगे)

★ ★ ★

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

रमज़ान का लाभ इस प्रकार प्राप्त होगा जब इन्सान में सदैव के लिए पवित्र परिवर्तन पैदा हो जाएं और ईद की ख़ुशियाँ भी उस वक़्त हासिल होंगी जब ये परिवर्तन हमेशा के लिए ज़िंदगी का हिस्सा बन जाएँगे

ख़ुलासा ख़ुतबा ईद-उल-फ़ित्र हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़र्मूदा 14 मई 2021 ई. स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टलफ़ोरड (सिरे) यू.के

तशह्हुद ,ताअव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अल्लाह तआला का बेहद फ़ज़ल और अहसान है कि उसने हमें रमज़ान के महीने से गुज़ार कर आज ईद का दिन देखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई लेकिन क्या यही इस रमज़ान का उद्देश्य था? क्या यही अल्लाह तआला हम से चाहता था कि हम उनत्तीस, तीस दिन रोज़े रखें और ईद मना लें, ख़ुशियाँ मना लें और खा पी लें, खेल कूद कर लें। अल्लाह तआला के इस एहसान को तो हक़ीक़त में हम उस वक़्त हासिल करने वाले होंगे जब रमज़ान के रोज़े और ये ईद हमें इस उद्देश्य को समझने वाला बनाए जो इस रमज़ान और ईद का उद्देश्य है कि ये बरकात और पाक परिवर्तन जो हासिल किए हैं और पैदा किया हैं, यदि वास्तव में किए हैं तो फिर तीस रोज़ों के बाद ये बातें नज़र आने वाली होनी चाहिऐं।

अत: रमज़ान का फ़ैज़ (लाभ) इस प्रकार हासिल होगा जब इन्सान में सदैव के लिए पवित्र परिवर्तन पैदा हो जाएं और ईद की ख़ुशियाँ भी उस वक़्त हासिल होंगी जब ये परिवर्तन हमेशा के लिए ज़िंदगी का हिस्सा बन जाएँगे। हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ और इस ज़माने के इमाम को माना है और आप अलैहिस्सलाम ने इस बारे में हमारी राहनुमाई फ़रमाई है कि किस तरह एक हक़ीक़ी मोमिन को होना चाहिए। आप के इर्शादात की रोशनी में इस वक़्त मैं कुछ वर्णन करूँगा कि हम रमज़ान के फ़ैज़ को जारी रखने वाले और हक़ीक़ी ख़ुशियाँ मनाने वाले किस तरह बन सकते हैं। क्या मयार हैं जो हमें हक़ीक़ी ईद मनाने के लिए हासिल करने की ज़रूरत है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : हम अल्लाह तआला की इबादत और उस से मुहब्बत का दावा करते हैं लेकिन उस से मुहब्बत के मयार क्या होने चाहिऐं जिनको हासिल कर के ख़ुदा मिलता है इस की वज़ाहत फ़रमाते हुए एक जगह हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

असल तौहीद को क़ायम करने के लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत से पूरा हिस्सा लो और यह मुहब्बत साबित नहीं हो सकती जब तक अमली हिस्सा में पूर्ण न हो। यदि कोई मिस्री का नाम लेता रहे तो कभी नहीं हो सकता कि वह मीठा काम हो जाए या यदि ज़ुबान से किसी की दोस्ती का एतराफ़ करे परन्तु मुसीबत और वक़्त पड़ने पर उसकी सहायता और देखभाल से निकल भागे तो वह मित्र सच्चा नहीं ठहर सकता। इसी प्रकार यदि ख़ुदा तआला की तौहीद का केवल मुख से ही इक़रार हो और उसके साथ मुहब्बत का भी मुख से ही इक़रार हो तो कुछ फ़ायदा नहीं बल्कि यह हिस्सा मुख से इक़रार के बजाय अमली हिस्सा को ज़्यादा चाहता है। इस से यह अर्थ भी नहीं कि मुख से इक़रार कोई चीज़ नहीं है। नहीं। मेरा उद्देश्य यह है कि मुख से इक़रार के साथ अमली तसदीक़ अनिवार्य है इस लिए ज़रूरी है कि ख़ुदा की राह में अपनी ज़िंदगी वक़्फ़ करो और यही इस्लाम है, यही वह उद्देश्य है जिस के लिए मुझे भेजा गया है। अत: जो इस वक़्त इस स्रोत के निकट नहीं आता जो ख़ुदा तआला ने इस उद्देश्य के लिए जारी किया है वह निसंदेह बेनसीब रहता है।

नमाज़ की एहमीयत के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं नमाज़ बड़ी ज़रूरी चीज़ है और मोमिन का मिराज है। ख़ुदा तआला से दुआ मांगने का बेहतरीन माध्यम नमाज़ है। नमाज़ इसलिए नहीं है कि टक्करें मारी जाएं या मुर्ग़ की तरह ठूंगें मार ली जाएं। नमाज़ ख़ुदा तआला की हुज़ूरी है और ख़ुदा तआला की तारीफ़ करने और इस से अपने गुनाहों के माफ़ कराने की मुरक्कब सूरत का नाम नमाज़ है। अत: नमाज़ बहुत ही अच्छी तरह पढ़ो। खड़े हो तो ऐसे तरीक़ से कि तुम्हारी मुख स्पष्ट बता दे कि तुम ख़ुदा तआला की इताअत और फ़रमांबर्दारी में तत्पर खड़े हो और झुकों तो ऐसे जिससे स्पष्ट मालूम हो कि तुम्हारा दिल झुकता है और सजदा करो तो इस आदमी की तरह जिसका दिल डरता है और नमाज़ों में अपने दीन और दुनिया के लिए दुआ करो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: ऐसी नमाज़ें यदि हमें हासिल हो जाएं तो वे दिन हमारी वास्तविक ईद के दिन होंगे। अपने जायज़े की ज़रूरत है। क्या हम यह हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वास्तविक ईद मना सकें या क्या इस रमज़ान में हमने यह अह्द किया है कि भविष्य में इस तरह अमल कर के अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश कर के अपने लिए ईद का सामान करेंगे।

एक सच्चे मुस्लमान को कैसा होना चाहिए इस विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : एक सच्चा मुस्लमान ख़ुदा के हुक्म से बाहर होना अपने लिए हलाकत का माध्यम समझता है चाहे उस को इस ना-फ़रमानी में कितनी ही आसाइश और आराम का वादा दिया जाए अत: हक़ीक़ी मुस्लमान होने के लिए ज़रूरी है कि इस किस्म की फ़ित्रत हासिल की जाए कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत और इताअत किसी प्रतिफल और दंड के ख़ौफ़ और उम्मीद की आधार पर न हो बल्कि फ़ित्रत का तिब्बी ख़ास्सा और भाग हो कर हो। फिर वह मुहब्बत बजाए स्वयं उस के लिए एक जन्नत पैदा कर देती है और हक़ीक़ी जन्नत यही है। कोई आदमी जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह इस मार्ग को धारण नहीं करता। इस लिए मैं तुमको जो मेरे साथ सम्बन्ध रखते हो उसी राह से दाख़िल होने की शिक्षा देता हूँ क्योंकि जन्नत का वास्तविक मार्ग यही है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: ये बहिश्त ही हक़ीक़ी ईद की ख़ुशी है जो हमने हासिल करनी है। हमें अपना जायज़ा लेना चाहिए कि क्या हम इस तरह की ईद की ख़ुशी मनाने के लिए तैयार हैं? इस बहिश्त को हासिल करने के लिए कोशिश कर रहे हैं?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ो और ख़ुदा से कभी निराश न हो। मोमिन ख़ुदा से कभी मायूस नहीं होता। यह काफ़िरों की आदत में दाख़िल है कि वे ख़ुदा तआला से मायूस हो जाते हैं। हमारा ख़ुदा عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ख़ुदा है। क़ुरआन शरीफ़ का अनुवाद भी पढ़ो और नमाज़ों को सँवार सँवार कर पढ़ो और इस का उद्देश्य भी समझो। अपनी ज़बान में भी दुआएं कर लो। क़ुरआन शरीफ़ को एक मामूली किताब समझ कर न पढ़ो बल्कि उसको ख़ुदा तआला का कलाम समझ कर पढ़ो। नमाज़ को इसी तरह पढ़ो जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम पढ़ते थे जबकि अपनी हाजतों और उद्देशों को मस्नून दुआओं के बाद अपनी भाषा में निसंदेह पढ़ा करो और ख़ुदा तआला से माँगो इस में कोई हर्ज नहीं है इस से नमाज़ कदापि ज़ाए नहीं होती। आजकल लोगों ने नमाज़ को ख़राब कर रखा है। नमाज़ें क्या पढ़ते हैं टक्करें मारते हैं। नमाज़ तो बहुत जल्दी जल्दी मुर्ग़ की तरह ठूंगें मार कर पढ़ लेते हैं और पीछे दुआ के लिए बैठे रहते हैं। नमाज़ का वास्तविक उद्देश्य और रूह तो दुआ ही है। नमाज़ से निकल कर दुआ करने से वह वास्तविक उद्देश्य कहाँ हासिल हो सकता है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: अत: ऐसी नमाज़ें और क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर हमारी हक़ीक़ी ईद और मुस्तक़िल ईद बनाएगा। क्या हमने इस रमज़ान में इस ईद को हासिल करने का अह्द किया है? यदि नहीं तो आज हमें अह्द करना चाहिए कि हमने अपनी नमाज़ों को सँवार कर पढ़ने और क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और ग़ौर करने के लिए अपनी ईद की ख़ुशियों को दाइमी करना है और यही इस की एक सूरत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-करीम की एहमीयत वर्णन करते हुए हैं : मैं ने क़ुरआन के शब्दों में ग़ौर किया तब मुझ पर खुला कि इस मुबारक लफ़्ज़ों में एक ज़बरदस्त भविष्यवाणी है। वह यह है कि यही क़ुरआन अर्थात पढ़ने के लायक़ किताब है और एक ज़माना में तो और भी ज़्यादा पढ़ने के यही क़ाबिल किताब होगी जबकि और किताबें भी पढ़ने में इस के साथ शरीक

की जाएँगी। बड़ा बेईमान है वे लोग जो क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ ध्यान न दें और दूसरी किताबों पर ही रात-दिन झुके रहे। हमारी जमात को चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम के शुग़ल और तदब्बुर में जान और दिल से व्यस्त हो जाएं। इस वक़्त क़ुरआन-ए-करीम का अस्त्र हाथ में लो तो तुम्हारी फ़तह है। इस नूर के आगे कोई ज़ुल्मत ठहर नहीं सकेगी।

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने भी एक अवसर पर फ़रमाया कि जिसको क़ुरआन का कुछ भी हिस्सा याद नहीं वह वीरान घर की तरह है। तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम को जल्दी जल्दी न पढ़ो बल्कि समझ कर पढ़ो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: उस रमज़ान में जो क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने की तरफ़ तवज्जा पैदा हुई है। कुछ ने शायद कुछ हिस्सा याद करने की भी कोशिश की हो, अत: उसे याद रखना, इसे दोहराना भी चाहिए ताकि याददाश्त में क़ायम रहे और फिर यह कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर ग़ौर करने की कोशिश भी करनी चाहिए। इस के आदेशों पर ग़ौर करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ ने जिस तरह फ़रमाया है इस पर गौर करो। और जब हम याद करने और गौर करने और क़ुरआन-ए-करीम को ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ने की तरफ़ तवज्जा देंगे तभी हम उस का हक़ अदा कर सकते हैं और तभी हम यह कह सकते हैं कि इस रमज़ान ने हमारे अंदर जो पाक परिवर्तन पैदा की हैं जिसकी वजह से हमें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने और समझने की तरफ़ तवज्जा हुई यही असल में हमारी ईद है। और इस ईद को आज हमने खुशियाँ मना कर ख़त्म नहीं कर लेना बल्कि हमेशा के लिए और हर-रोज़ अल्लाह तआला की किताब को समझ कर पढ़ने से आनंद उठाना है। और केवल आनंद ही नहीं उठाना बल्कि इसलिए पढ़ना है ताकि इस की तालीम को समझ कर रुहानी तरक़्क़ी हो और हमारा हर दिन ईद की खुशियाँ लाने वाला दिन हो।

हुक़ूक़-उल-इबाद (मनुष्यों के आपसी अधिकारों) की अदायगी की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : याद रखो कि एक मुस्लमान को हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़-उल-ईबाद को पूरा करने के वास्ते हर समय तैयार रहना चाहिए और जैसे मुख से ख़ुदा तआला को उस की ज़ात और सिफ़ात में वाहिद ला शरीक (ईश्वर एक है और उसका कोई साझेदार नहीं है) समझता है ऐसे ही अमली तौर पर उस को दिखाना चाहिए और उस के लोगों के साथ हमदर्दी और प्रेम से पेश आना चाहिए और अपने भाईयों से किसी किस्म का भी द्वेष, छल और कपट नहीं रखना चाहिए और दूसरों की ग़ीबत करने से बिल्कुल अलग हो जाना चाहिए। बहुत से ऐसे हैं जो आपस में फ़साद और दुश्मनी रखते हैं और अपने से कमज़ोर और ग़रीब शख़्सों को बुरी दृष्टि से देखते हैं और बदसुलूकी से पेश आते हैं और एक दूसरे की ग़ीबतें करते और अपने दिलों में बुग़ज़ और कीना रखते हैं लेकिन ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि तुम आपस में एक वजूद की तरह बन जाओ और जब तुम एक वजूद की तरह हो जाओगे उस वक़्त कह सकेंगे कि अब तुमने अपने नफ़्सों का तज़किया कर लिया क्योंकि जब तक तुम्हारा आपस में मुआमला साफ़ नहीं होगा उस वक़्त तक ख़ुदा तआला से भी मुआमला साफ़ नहीं हो सकता।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस इच्छा के अनुसार अपने आपको बना लेंगे तो यही हमारे लिए हक़ीक़ी ख़ुशी और ईद का दिन है और इस के लिए हमें अपना जायज़ा लेना होगा कि क्या हम अपने भाईयों के हुक़ूक़ अदा कर रहे हैं या यह अह्द करते हैं कि आइन्दा इन शा अल्लाह अदा करने की कोशिश करेंगे।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : मनुष्यों पर शफ़क़त और उस से हमदर्दी करना बहुत बड़ी इबादत है और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए यह एक ज़बरदस्त माध्यम है। जो लोग गरीबों के साथ अच्छे सुलूक से पेश नहीं आते बल्कि उनको हक़ीर समझते हैं मुझे डर है कि वह ख़ुद इस मुसीबत में मुबतला न हो जाएँ। अल्लाह तआला ने जिन पर फ़ज़्ल किया है इस की शुक्रगुज़ारी यही है कि उसके लोगों के साथ एहसान का सुलूक करें और उस ख़ुदादाद फ़ज़्ल पर-तकब्बुर न करें और वहशियों की तरह गरीबों को कुचल न डालें।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: ग़रीबों की ज़रूरतमंदों की मदद ही अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और प्यार को खीचने करने वाली होनी चाहिए और होगी और जब यह होगा तो हक़ीक़ी ईद का दिन होगा। इन्फ़िरादी तौर पर भी जमाअत में लोग एक दूसरे की मदद करते हैं लेकिन जमाअती तौर पर भी फ़ंडज़ क़ायम हैं वहां भी जो साहिब-ए-हैसियत लोग हैं उनको कुछ न कुछ अदायगी करनी चाहिए। मरीज़ों की इमदाद का फ़ंड है। यतीमों का फ़ंड है। गरीबों का फ़ंड है। ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता का फ़ंड है और इस तरह बहुत सारे हैं जहां मदद की जाती है। इस तरफ़ भी जमाअत के लोगों को जो हैसियत रखते हैं लोगों को तवज्जा देनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अत: ये वह तालीम है जो हक़ीक़ी ईद की खुशियाँ दे सकती है। यदि हम इस के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालेंगे तो हक़ीक़ी ईद मनाने वाले होंगे। केवल वर्ष की दो ईदें ही नहीं बल्कि हर दिन हमारे लिए ईद का दिन होगा क्योंकि हम अल्लाह तआला का हक़ीक़ी अबद बनने के लिए उस की इबादत का हक़ अदा करने की कोशिश करेंगे जिससे अल्लाह तआला पहले से बढ़कर हमें नवाज़ेगा। हम क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ और समझ कर इस पर अमल करने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला अपने फ़ज़्लों का हमें वारिस बनाएगा। हम हुक़ूक़ उल-ईबाद की अदायगी की कोशिश करेंगे तो ख़ुदा तआला अपनी मुहब्बत की नज़र हम पर डालेगा और यही चीज़ें हैं जिसको मिल जाएं उस की वास्तविक ईद हो जाती है। दुआ और कोशिश करनी चाहिए कि यह हक़ीक़ी ईद हम हासिल करने वाले हों।

★ ★ ★

पृष्ठ 1का शेष

क्योंकि सारा दिन भूखे रहना पड़ता है। और शारीरिक सम्बन्ध की कमी भी ज़ाहिर है। फिर कम बोलना भी रमज़ान में आ जाता है इस लिए कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा फ़रमाया रोज़ा यह नहीं कि इन्सान अपना मुँह खाने पीने से बंद रखे बल्कि रोज़ा यह है कि तो व्यर्थ की बातें भी न करे। अत: रोज़ादार के लिए बेहूदा बातों से बचना लड़ाई झगड़े से बचना और इसी तरह की और लगू बातों से परहेज़ करना भी ज़रूरी होता है। इस तरह कम बोलना भी रमज़ान में आ गया। मानों कि कम खाना कम बोलना कम सोना और शारीरिक सम्बन्ध कम करना ये चारों बातें रमज़ान में आ गईं। और ये चारों चीज़ें निहायत ही महत्वपूर्ण हैं और इन्सानी ज़िंदगी का उनसे गहिरा ताल्लुक़ है अत: जब एक रोज़ादार इन चारों आरामन और आसाइश के सामानों में कमी करता है तो इस में मशक़्क़त बर्दाश्त करने की आदत पैदा हो जाती है और वह ज़िंदगी के प्रत्येक दौर में मुश्किलात का मर्दानावार मुक़ाबला करता और सफ़लता प्राप्त करता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 2, पृष्ठ 376 मुद्रित 2010 ई. क़ादियान)

★ ★ ★

127 वां जलसा सालाना क़ादियान

23, 24, और 25 दिसम्बर 2022 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 127वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 23,24,25 दिसंबर 2022 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयारी आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 07 Thursday 21 April 2022 Issue No.16

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अहमदी विद्यार्थी ध्यान दें!

(जामिआ अहमदिया क़ादियान में प्रवेश के लिए)

जामिआ अहमदिया क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा स्थापित किया हुआ वह पवित्र संस्थान है जहां से अब तक सैंकड़ों उल्मा और मुबल्लेग़ीन शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं और इस्लाम की सच्ची शिक्षा को दुनिया के किनारों तक पहुंचाने का कर्तव्य अदा कर रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भी कई अवसरों पर अहमदी विद्यार्थियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़ायम करदा मुक़द्दस दीनी संस्थान से शिक्षा प्राप्त करके सिलसिला की ख़िदमत की तरफ़ ध्यान दिलाया है। इस लिए सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आदेशों की रोशनी में ज़्यादा से ज़्यादा वाकफ़ीन नौ और ग़ैर वाकफ़ीन नौ विद्यार्थियों को जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेकर दीनी तालीम हासिल करके सिलसिला की ख़िदमत के लिए आपने आपको पेश करना चाहिए।

शैक्षणिक वर्ष 2022-2023 ई. के लिए जामिआ अहमदिया में दाख़िला की कार्रवाई अप्रैल के महीने 2022 ई. से शुरू हो गई है। वर्तमान हालात में जामिआ अहमदिया में दाख़िला के इच्छुक विद्यार्थियों के दाख़िला की कार्रवाई ऑनलाइन ही की जा रही है। इस लिए वे विद्यार्थियों जो जामिआ अहमदिया में दाख़िला लेना चाहते हैं वे विभाग वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क करें और जल्द से जल्द जामिआ अहमदिया का दाख़िला फ़ार्म भर करके दफ़्तर वक़्फ़-ए- नौ भारत (नज़ारत तालीम) में मेल के माध्यम से या डाक से भिजवाएं। दाख़िला की शर्तों के लिए विभाग वक़्फ़-ए-नौ भारत (नज़ारत तालीम) से सम्पर्क किया जा सकता है।

(सदर नैशनल कैरीयर प्लैनिंग कमेटी वक़्फ़-ए-नौ भारत)

★ ★ ★

सालाना इज्तिमाआत 2022 ई.

सय्यदना हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ेली तंज़ीमात मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, मज्लिस अंसारुल्लाह और लजना इमाइल्लाह के सालाना इज्तिमाआत के लिए तिथि 21,22,23 अक्तूबर 2022 ई. दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार की तिथियों की दुआ तथा प्रेम पूर्वक स्वीकृति प्रदान की है। लोग इसके अनुसार दुआओं के साथ इन इज्तिमाआत में शामिल होने की हर सम्भव कोशिश करें।

(सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सदक़तुल फ़ित्र का देना

अल्-हमदो लिल्लाहि रमज़ानुल मुबारक का पवित्र महीना अप्रैल की पहली दहाई से शुरू हो रहा है। इस्लाम में फ़ित्राना की अदायगी के लिए एक साअ अर्थात क़रीबन 2 किलो 750 ग्राम अनाज की शरह निर्धारित है। जमआत के लोग पूरी शरह के साथ रमज़ानुल मुबारक की पहली या दूसरी दहाई के अंदर अंदर ही सदक़तुल फ़ित्र की अदायगी की कोशिश करें। चूँकि भारत के विभिन्न राज्यों में आहार (गंदुम, चावल) की क़ीमत अलग अलग हैं इस लिए अपनी स्थानीय क़ीमत के अनुसार निर्धारित शरह 2 किलो 750 ग्राम (आहार) के अनुसार फ़ितराना की रक़म की अदायगी करें। पंजाब के लिए इस वर्ष सदक़तुल फ़ित्र की रक़म तकरीबन छप्पन रुपये (rs.56/) निर्धारित की गई है।

स्थानीय जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद मौजूद होने की सूरत में सदक़तुल फ़ित्र की मजमूई रक़म में से नव्वे फ़ीसद तक की रक़म मज्लिस-ए-आमला के मश्वरा और फ़ैसला के बाद तक़सीम की जा सकती है बक़ीया रक़म मर्कज़ में जमा करवानी होगी। जिस जमाअत में गरीब और ज़रूतमंद न हों उस जमाअत की वसूल शूदा समस्त रकमें सदर अंजुमन अहमदिया के जमाअती एकाऊंट में आनी चाहिए।

स्पष्ट रहे कि फ़ित्राना की रक़म मसाजिद इत्यादि की ज़रूरत पर ख़र्च करने की आज्ञा नहीं है।

(नाज़िर बैतुल माल क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad